₹ 10

www.kewalsachtimes.com

जनवरी 2023

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

RNI NO.-BIHBIL/2011/49252, DAVP NO.-131729, POSTAL REG. NO.:-PT-78

क्या मिशन 2024 का बन रहा मास्टर प्लान?

जन-जन की आवाज है केवल सच

निर्भीकता हमारी पहचान
केवल सच
हिन्दी मासिक पत्रिका

Kewalachlive.in
वेब पोर्टल न्यूज
24 घंटे आपके साथ

Kewalsach news
www.kewalsach.com
Kewalsach news
Mob.: 9431073769, 9308815605
खबर वहीं,
जो केवल सच हो

केवल सच TIMES
21 तक आने की संभावना नहीं: विज्ञान मंत्रालय

आत्म-निर्भर बनने वाले युवाओं को सपोर्ट करें

आपका छोटा सहयोग, हमें मजबूती प्रदान करेगा

BHIM UPI
G Pay पे paytm

www.kewalsach.com
www.kewalsachlive.in

-: सम्पर्क करें :-

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14, मकान संख्या-28/14,
कंकड़बाग, पटना (बिहार)-800020, मो०:-9431073769, 9308815605

जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ

सत्येन्द्र नाथ बोस
01 जनवरी 1894

नाना पाटेकर
01 जनवरी 1951

विद्या बालन
01 जनवरी 1978

ममता बनर्जी
05 जनवरी 1955

दीपिका पादुकोण
05 जनवरी 1986

विपाशा वसु
07 जनवरी 1979

ए.आर. रहमान
08 जनवरी 1966

फराह खान
09 जनवरी 1965

हृतीक रौशन
10 जनवरी 1974

राहुल द्रविड
11 जनवरी 1973

स्वामी विवेकानन्द
12 जनवरी 1863

प्रियंका गांधी
12 जनवरी 1972

राकेश शर्मा
13 जनवरी 1963

मायावती
15 जनवरी 1956

जावेद अख्तर
17 जनवरी 1945

सुभाष चन्द्र बोस
23 जनवरी 1897

बाल ठाकरे
23 जनवरी 1926

बॉबी दिओल
27 जनवरी 1967

लाला लाजपत राय
28 जनवरी 1865

प्रिति जिंटा
31 जनवरी 1975

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

Regd. Office :-
East Ashok, Nagar, House No.-28/14, Road No.-14, kankarbagh, Patna- 8000 20 (Bihar) Mob.-09431073769,
E-mail :- kewalsach@gmail.com

Corporate Office:-
Riya Plaza, Flat No.-303, Kokar Chowk, Ranchi-834001 (Jharkhand)
Mob.- 09955077308,
E-mail:-
editor.kstimes@rediffmail.com

Delhi Office :-
Sanjay Kumar Sinha
A-68, 1st Floor, Nageshwar talla, Shastri Nagar, New Delhi-110052
Mob.- 09868700991, 09955077308
kewalsach_times@rediffmail.com

Kolkata Office :-
Ajeet Kumar Dube,
131 Chitranjan Avenue, Near- md. Ali Park, Kolkata- 700073 (West Bengal)
Mob.- 09433567880, 09339740757

ADVERTISEMENT RATES PER ISSUE

COLOUR	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
	Cover Page	3,00,000/-	N/A
	Back Page	1,00,000/-	65,000/-
	Back Inside	90,000/-	50,000/-
	Back Inner	80,000/-	50,000/-
	Middle	1,40,000/-	N/A
	Front Inside	90,000/-	50,000/-
	Front Inner	80,000/-	50,000/-

B & W	AREA	FULL PAGE	HALF PAGE
	Inner Page	60,000/-	40,000/-

1. एक साल के नियमित विज्ञापन पर पत्रिका के वेवसाइट **www.kewalsachtimes.com** के फ्रंट पर भी विज्ञापन निःशुल्क तथा आपका वेवसाइट से सीधा लिंक हो सकता है।
2. एक साल के नियमित विज्ञापन पर 10 प्रतिशत की रियायत।
3. आपके प्रोडक्ट या संगठन के प्रचार-प्रसार हेतु आलेख को उचित स्थान।
4. पत्रिका द्वारा सामाजिक कार्य में आपके संगठन/प्रोडक्ट का बैनर/फ्लैक्स को उचित स्थान देकर आपके संगठन का व्यापक प्रचार-प्रसार।
5. विज्ञापन का भुगतान चेक या आर.टी.जी.एस. से ही मान्य होगा।

महाप्रबंधक (विज्ञापन)

मैं ही बिहार

मैं ही नीतीश कुमार

अपनी प्रतिक्रिया हमारे ई-मेल पर दें:- editor.kstimes@rediffmail.com

प्राचीन देश भारत का प्रांत बिहार अपनी प्रतिभा का लोहा अनंत काल से पूरे विश्व से मनवाता रहा है। आजादी के पूर्व में बिहार का अवलौकिक इतिहास ने बिहार को सदैव सर्वोच्च स्थान पर रखा है लेकिन आजादी के बाद कुछ वर्षो तक तो बिहार अपनी गरिमा को बचाए रहा लेकिन इसके बाद बिहार धीरे-धीरे बीमार होने लगा और स्थिति इतनी भयावह हो गई की प्रदेश विभिन्न क्षेत्रों में वह भेंटीलेटर पर जा पहुंचा लेकिन 2005 में बिहार की कमान नीतीश कुमार ने संभाली और इसके बाद दागदार हो चुका बिहार ने पूरे देश को संदेश दिया की यह बिहार है नीतीश कुमार का, जहां सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के साथ पर्यटन भी भरोसा के साथ आगे बढ़ने लगा। बिहार में माहौल बदला और लोगो ने नीतीश कुमार पर इतना भरोसा किया की विपक्ष हीं बिहार से गायब हो गया और बिहार के अलावा पड़ोसी राज्य भी बिहार मॉडल की सराहना करने लगे और उम्मीद की नजरों से देखने लगे। केंद्र सरकार यूपीए की हो या राजग की नीतीश कुमार का जय जयकार होता रहा है। दोस्ती तोड़ने और जोड़ने में महारथ हासिल रखने वाले नीतीश कुमार की आखिर कौन सी बात किसको कब चुभती है और कब अच्छा लगता है, इस बात की गहनता से राजनेता के साथ-साथ बिहार की जनता भी मंथन करने में लगी है। खुद गठबंधन तोड़ने का भी रिकॉर्ड उसी प्रकार बनाया, जिस प्रकार मुख्यमंत्री बनने एवं इस्तीफा देने का बनाया। फिर एक बार बिहार में सत्ता का फेरबदल की राजनीति तुल पकड़ चुकी है, लेकिन यह बिहार है और नीतीश कुमार भी...।

बिहार में नीतीश कुमार का आज कोई ठोस विकल्प ना हीं भाजपा के पास और ना ही राजद के पास, वही दूसरी ओर कांग्रेस तो खुद विपक्ष के लायक ही बच जाए ग्लिम्ट है वैसे में बार बार गठबंधन तोड़ने और जोड़ने के बाद भी नीतीश कुमार की विश्वसनीयता में कोई कमी नहीं आई है अलबत्ता भाजपा और राजद किसी भी सूरत में नीतीश कुमार के चेहरे पर राजनीति कर रहे हैं। 2022 में भाजपा से अलग होने के बाद से ही नीतीश कुमार पर पक्ष और विपक्ष हमला कर रहा है लेकिन कोई भी नेता उनका विकल्प के रूप में नहीं दिखता। आर सी पी सिंह और नीतीश कुमार के बीच दरार डालकर अलग कर दिया गया ताकि श्री कुमार मुख्यमंत्री पर दवाब की राजनीति की जा सके। बिहार प्रदेश के नालंदा जिला के कल्याण बिगहा के नीतीश कुमार आज बिहार के ऐसे मुख्यमंत्री हैं जिनका विकल्प ढूंढना विपक्ष के लिए चुनौतीपूर्ण है। श्री कुमार का जन्म 01 मार्च 1951, बख्तियारपुर, बिहार, भारत) एक भारतीय राजनीतिज्ञ हैं और बिहार के मुख्यमंत्री हैं। बिहार राज्य जिसकी छवि धूमिल हो गई थी, विश्वास समाप्त हो गया था, चारो तरफ अपराध और भ्रष्टाचार का बोल बाला था। महिलाएं दिन में भी असुरक्षित थी। सड़क, अस्पताल और स्कूल की हालत जर्जर थी और पुलिस का दामन इतना दागदार हो गया था की घर वालों को भी उनपर भरोसा नहीं था। बिहार का स्लोगन जब प्रशांत किशोर ने दिया था बिहार में बाहर है, नितिशे कुमार है को लोगो ने दिल पर लिया और नरेंद्र मोदी के प्रचंड प्रचार के बाद भी बिहार में 2015 में नीतीश कुमार ने विजय प्राप्त की ओर मुख्यमंत्री का ताज पहना। नीतीश कुमार बिहार के इकलौते ऐसे मुख्यमंत्री हैं और रहेंगे जिन्होंने सबसे अधिक बार मुख्यमंत्री की शपथ ली और इस्तीफा दिया वावजूद उनकी लोकप्रियता में कोई विशेष कमी नहीं आई है। जनता का मन मिजाज जानने तथा सरकार की योजना धरातल पर कितना है जानना और पदाधिकारी को भी हिदायत देने के लिए सबसे अधिक यात्रा की तथा एक से बढ़कर नाम दिया। सेवा यात्रा के बाद अब राजद के साथ मिलकर समाधान यात्रा पर निकले हैं। 2005 से 2014 तक बिहार के मुख्यमंत्री और 2015 से 2017 में सीएम के रूप में एक संक्षिप्त कार्यकाल के बाद कुछ विचार के कारण उन्होंने अपने पद से इस्तीफा दे दिया और एक बार फिर एनडीए से हाथ मिला लिया लेकिन फिर 05 साल बाद 2022 में अपने अस्तित्व को समाप्त होने से बचाने के लिए राजद का दामन थाम लिया। बिहार में नीतीश कुमार ने बिहार के सभी दल के नेताओं को कैसे अपने पक्ष में किया जाए तथा कैसे उसको साइड करने का कूटनीति किया जाए इसमें सफल मुख्यमंत्री के रूप में आज भी विराजमान है। नीतीश कुमार ही बिहार हैं और बिहार हीं नीतीश कुमार हैं की स्थिति बिहार प्रदेश में कायम है। एक साल बाद 2024 में लोकसभा चुनाव होना है तथा 2025 में बिहार विधानसभा का चुनाव भी है और केंद्र की मोदी की नजर भी बिहार और विशेषकर नीतीश कुमार पर है और यह बात उपेंद्र कुशवाहा, ललन सिंह और तेजस्वी यादव को ज्ञात है की चाणक्य की कूटनीति की राजनीति में बिहार में नीतीश कुमार का कोई जोड़ नहीं है। सायकिल योजना और शराबबंदी के साथ सात निश्चय की योजना ने बिहार की जनता के बीच न सिर्फ लोकप्रिय बना दिया बल्कि इकलौता नेता बना दिया। भले ही नीतीश कुमार पर गठबंधन सरकार को तोड़ने का आरोप लगता है लेकिन यह भी सत्य है की श्री कुमार ने कभी भी परिवारवाद को महत्व नहीं दिया और 2005 से 2022 तक उनके पुत्र निशांत कुमार को कभी उत्तराधिकारी के रूप में प्रोजेक्ट नहीं किया। आज एक मुखिया बनते हीं अपनी पत्नी और पुत्र के लिए राजनीति में सभी सिद्धांत को ठोकर मार देते हैं लेकिन मुख्यमंत्री रहते हुए कभी अपने भाई, भतीजा और बेटा के लिए कभी पहल नहीं की यह एक सुखद संदेश के रूप में सूबे की जनता ने देखा है जिसकी वजह से नीतीश कुमार की साख बढ़ी है। जबकि अन्य दलों में परिवारवाद, जातिवाद के अलावा हर प्रकार का वाद प्रस्तुत किया जाता रहा है और सत्ता के सिंहासन के लिए किसी भी प्रकार का प्रयोग करने से गुरेज नहीं करते। आज भले ही नीतीश कुमार को भाजपा के नेता सुशील कुमार मोदी कोसते रहें परन्तु आज भी भाजपा की यह चाहत है कि नीतीश कुमार और बिहार का साथ बन जाए। मोदी एवं कुमार के बीच दूरियां बनी रहे इसके लिए दोनों दलों में जयचंद सक्रिय हैं और दोनों शीर्ष नेताओं को भी यह ज्ञात है की कुछ तो बात है परंतु पार्टी की मर्यादा बचाए रखने के लिए गठबंधन से अलग हैं और दोनों दलों के नेता फिर से संबंध बनाना चाहते हैं परंतु कुछ लोग अपने दल को मोदी से जोड़ना चाहते हैं। बिहारी फर्स्ट की राजनीति की शंखनाद करने वाले चिराग पासवान भीं जानते हैं की भाजपा का मोह आज भी नीतीश कुमार से कम नहीं हुआ है और अकेले दम पर बिहार की सत्ता के सिंहासन पर बैठना मुश्किल है इसी कारण से चिराग भाजपा के हनुमान की भूमिका में 2020 के चुनाव एवं 2022 के विधानसभा के उप चुनाव में भी नजर आएं। हम, लोजपा, वीआईपी और रालोसपा जैसी पार्टी के साथ सिद्धांत की राजनीति की दुहाई देने वाली वामपंथी पार्टी भी नीतीश कुमार के सामने घुटने टेक चुकी है और यह साबित हो चुका है की बिहार में नीतीश कुमार और नीतीश कुमार से बिहार है का वातावरण बना हुआ है। चुनाव का शंखनाद हो चुका है और प्रधानमंत्री के उम्मीदवार बनने के चक्कर में बिहार और नीतीश कुमार दोनो को खामियाजा उठाना पड़ रहा है और नीतीश कुमार 2025 में बिहार का नेतृत्व तेजस्वी को देने के लिए तैयार हैं पर 2024 की राजनीति की समीक्षा के बाद तब तक बिहार में सिर्फ नीतीश कुमार ही हैं।

KEWAL SACH TIMES

A National Magazine

वर्षः- 12, अंकः- 140 माहः- जनवरी 2023 रू. 10/-

Editor

Brajesh Mishra 9431073769
6206889040
8340360961

editor.kstimes@rediffmail.com
kewalsach@gmail.com
kewalsach_times@rediffmail.com

Principal Editor

Arun Kumar Banka 7782053204
Surjit Tiwary 9431222619
Nilendu Kumar Jha 9431810505

General Manager (H.R)

Triloki Nath Prasad 9308815605

General Manager (Advertisement)

Manish Kamaliya 6202340243
Poonam Jaiswal 9430000482

Joint Editor/Lay-out Editor

Amit Kumar 9905244479
amit.kewalsach@gmail.com

Legal Editor

Amitabh Ranjan Mishra 8873004350
S. N. Giri 9308454485

Asst. Editor

Mithilesh Kumar 9934021022
Sashi Ranjan Singh 9431253179
Rajeev Kumar Shukla 7488290565

Sub. Editor

Arbind Mishra 6204617413
Prasun Pusakar 9430826922
Brajesh Sahay 7488696914

Bureau Chief

Sanket kumar Jha 7762089203
Sagar Kumar 9155378519

Bureau

Sridhar Pandey 9852168763
Sonu Kumar 8002647553

Photographer

Mukesh Kumar 9304377779

प्रदेश प्रभारी

दिल्ली हेड

संजय कुमार सिन्हा 9868700991

झारखण्ड हेड

ब्रजेश मिश्र (2) 7979769647
7654122344

पश्चिम बंगाल हेड

अजीत दुबे 9433567880
9339740757

मध्यप्रदेश हेड

अभिषेक पाठक 8109932505
8269322711

छत्तीसगढ़ हेड

आवश्यकता है

उत्तर प्रदेश हेड

निर्भय कुमार मिश्रा 9452127278

उत्तराखण्ड हेड

आवश्यकता है

महाराष्ट्र हेड

आवश्यकता है

गुजरात हेड

आवश्यकता है

आंध्र प्रदेश हेड

आवश्यकता है

राजस्थान हेड

आवश्यकता है

पंजाब हेड

आवश्यकता है

हरियाणा हेड

आवश्यकता है

राजस्थान हेड

आवश्यकता है

उड़ीसा हेड

आवश्यकता है

आसाम हेड

आवश्यकता है

हिमाचल हेड

आवश्यकता है

दिल्ली कार्यालय

केवल सच टाइम्स, द्विभाषीय पत्रिका,
द्वारा- संजय कुमार सिन्हा
97 ए, डी डी ए फ्लैट
गुलाबी बाग, नई दिल्ली- 110007
मो०- 09868700991, 09431073769

पश्चिम बंगाल कार्यालय

केवल सच टाइम्स, द्विभाषीय पत्रिका,
द्वारा- अजीत कुमार दुबे
131 चितरंजन एवेन्यू,
कोलकात्ता, पश्चिम बंगाल- 700073
मो०- 09433567880, 09339740757

झारखण्ड कार्यालय

केवल सच, हिन्दी मासिक पत्रिका,
द्वारा- अभिषेक कुमार मिश्र
महुआ टोली, गाड़ीगांव
होटवार, खेलगांव, राँची- 834012
मो०- 8789679740, 9431073769

विशेष प्रतिनिधी

भारती मिश्र 8521308428
बेंकटेश कुमार 8210023343

प्रकाशित आलेख पर आप अपना सुझाव एवं प्रतिक्रिया अवश्य दें।

केवल सच टाइम्स

द्विभाषीय मासिक पत्रिका

हमारा पता है

पूर्वी अशोक नगर, रोड नं.-14,

मकान संख्या:- 14/28, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)

सम्पर्क करें:- 9431073769, 8340360961

हमारा ई-मेल

editor.kstimes@rediffmail.com

kewalsach_times@rediffmail.com

दिसम्बर 2022

भ्रष्टाचार

मिश्रा जी,

केवल सच टाइम्स पत्रिका के दिसंबर 2022 अंक में प्रकाशित संपादकीय भ्रष्टाचार निगम, परिषद और पंचायत में आपने वर्तमान समय पर बहुत सटीक और ज्वलंत मुद्दे को गंभीरतापूर्वक लिखा है तथा नागरिकों की आंख खोलने की सही नसीहत दी है। सरकार एवं विभाग की वास्तविक सच्चाई को बिना भय का लिखना आज के दौर में जान जोखिम में डालने जैसा है। आज मीडिया सरकार की हांथ की कठपुतली बन गई है अन्यथा उसको विज्ञापन से वंचित कर दिया जाता है। यह संपादकीय सही समय पर प्रकाशित करने के लिए आप बधाई के पात्र हैं। सही खबर देता है आपकी पत्रिका।

● **टुनटुन राय, पेठिया बाजार, खगौल, पटना**

सटीक समीक्षा

संपादक महोदय,

दिसंबर 2022 अंक में वैसे तो सभी खबर पठनीय और जानकारीप्रद है। मध्यप्रदेश में होने वाले चुनाव पर विकास सिंह ने बेहतरीन बातों को पाठकों के बीच रखा है। किस प्रकार नए लोगों को शेष बचे सरकार के कार्यकाल में मंत्री पद मिलेगा या पुराने लोगों को भी बड़ा दायित्व मिलेगा। वहीं दूसरी ओर अवधेश कुमार की खबर परिणाम में सभी पार्टियों के लिए संदेश में स्पष्ट तौर पर गुजरात में भाजपा का प्रचंड बहुमत तथा हिमाचल प्रदेश में प्रति पांच साल पर सरकार बीडीएल देने के पीछे के गूढ़ रहस्यों को पाठकों के बीच रखा है, जिसको सभी राजनीतिक दलों को मंथन की आवश्यकता है।

● **शंभू शरण महाराज, करोल बाग, नई दिल्ली**

विश्व कप

संपादक महोदय,

राजनीति, अपराध, भ्रष्टाचार के साथ साथ खेल की खबरों को भी प्राथमिकता से केवल सच टाइम्स पत्रिका प्रकाशित करता है। दिसंबर 2022 अंक में अमित कुमार की खबर 36 साल बाद अर्जेंटीना ने जीता विश्व कप में खेल के प्रति खिलाड़ियों के हौसले एवं परिश्रम को काफी रोचक रूप से पाठकों के बीच रखा है। फुटबॉल की खबर को प्राथमिकता देना बड़ी बात है क्योंकि सभी खेल पर क्रिकेट हावी हो गया है। आज भी फुटबॉल और हॉकी के दर्शक हैं और इसमें आज भी खेल की भावना खिलाड़ियों में देखा जाता है और विज्ञापन से ज्यादा अपने खेल पर फोकस करके खेलते हैं। अच्छी खबर।

● **महेश मुंडा, करमटोली चौक, रांची**

बिहार

संपादक महोदय,

बिहार प्रदेश में पिछले 10 साल से सरकार बनाना, गिराना, फिर बनाना और अब तो बयानबाजी एवं गठबंधन को तोड़ना जोड़ना एक परंपरा बन चुका है, जिसके मुखिया नीतीश कुमार हैं। बिहार 2022 में गठबंधन तोड़ने जोड़ने, आरसीपी सिंह को जदयू से बाहर करने, शराब कांड, अग्निपथ जैसे मामले को लेकर बिहार जलता रहा और राजनीति जनहित के बजाय पार्टीहित में चलती रही। अगर गोपालगंज और कुढ़नी का उपचुनाव में भाजपा की जीत नहीं होती तो 2022 में हीं तेजस्वी यादव मुख्यमंत्री बन सकते थे और सबसे अधिक नुकसान नीतीश कुमार को उठाना पड़ता। संक्षिप्त होने के बाद भी सही व सटीक खबर है।

● **संजीव परासर, राजेंद्र नगर, पटना**

रैगिंग

मिश्रा जी,

मेडिकल और इंजीनियरिंग कॉलेजों में रैगिंग भी एक अध्याय बन चुका है, जिसमे कुछ हद तक नकेल भी किया जा रहा है। लेकिन कुछ वर्ष का इतिहास पलट कर देखा जाए तो कई घटनाओं से रूह तक कांप जाती है। केवल सच टाइम्स पत्रिका के दिसंबर 2022 अंक में नवीन रांगियाल ने क्या है भारत में रैगिंग का इतिहास की खबर को पूरी जानकारी एवं तथ्यों के साथ लिखा है कि किस प्रकार छात्र संगठनों ने रैगिंग को बढ़ावा दिया। कई छात्रों ने आत्महत्या कर लिया तो कई ग्लानि से शिक्षा हीं छोड़ दिया। रैगिंग का इतिहास पढ़ेंगे तो इसका घिनौना चेहरा वास्तव में एक कलंक है। सच्चाई को लिखा है आपने।

● **पुनीत सक्सेना, माटुंगा मार्केट, मुंबई**

आर्गेनिक फार्मिंग

ब्रजेश जी,

डॉक्टर संदीप भट्ट ने दिसंबर 2022 अंक में वर्तमान समय में रोजगार के दृष्टिकोण से आर्गेनिक फार्मिंग को कैरियर के लिए बेहतरीन सेक्टर माना है और इस विषय पर बहुत ही सटीक समीक्षा करते हुए खबर को लिखा है। आज के बेरोजगारी के दौर में जहां लोग खेती से भाग रहे थे वहीं आर्गेनिक फार्मिंग सेक्टर ने रोजगार का द्वार खोल दिया है तथा मिलावट से भी बचाने का सार्थक प्रयास किया जा रहा है। वैसे भी कृषि प्रधान देश भारत में कृषि व्यापार को केंद्र एवं राज्य सरकार बढ़ावा दे रही है और उसके लिए कई योजनाओं को भी प्राथमिकता से लागू किया जा रहा है। यह खबर युवाओं के लिए भी बहुत उपयोगी है और इसका लाभ उठाना चाहिए।

● **प्रमोद पाण्डेय, चंदौली बाजार, उत्तर प्रदेश**

अन्दर के पन्नों में

23 दर्दनाक विमान हादसा कोई भी जिंदा नहीं बचा

27 उपराज्यपाल के खिलाफ सड़क पर दिल्ली सरकार

Arrested terror suspects 35

39 कॉम्पिटिशन एग्जाम कोचिंग में करियर

श्री चन्द्र प्रकाश सिंह

प्रधान संरक्षक सह प्रबंध संपादक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
राष्ट्रीय संगठन मंत्री, राष्ट्रीय मजदूर कांग्रेस (इंटक)
पूर्व निदेशक सदस्य, ओरियेंटल बैंक ऑफ कॉमर्स
09431016951, 09334110654

डॉ. सुनील कुमार

शिशु रोग विशेषज्ञ सह मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका
एवं 'केवल सच टाइम्स'
एन.सी.- 115, एसबीआई ऑफिसर्स कॉलोनी,
लोहिया नगर, कंकड़बाग, पटना- 800020
फोन- 0612/3504251

श्री सज्जन कुमार सुरेका

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
डी- 402 राजेन्द्र विहार, फॉरेस्ट पार्क
भुवनेश्वर- 751009 मो-09437029875

सुधीर कुमार

मुख्य संरक्षक सह निदेशक **''मगध इंटरनेशनल स्कूल''** टेकारी
'' केवल सच '' पत्रिका **एवं '' केवल सच टाइम्स ''**
9060148110
sudhir4s14@gmail.com

श्री आर के झा

मुख्य संरक्षक
'केवल सच' पत्रिका **एवं 'केवल सच टाइम्स'**
EX. CGM, (Engg.) N.B.C.C
08877663300

एक नजर

संपादकीय व प्रधान कार्यालयः-

- पूर्वी अशोक नगर, रोड नं:-14, मकान संख्या:- 28/14, कंकड़बाग, पटना-800020 (बिहार)
  e-mail:- kewalsach@gmail.com,
  editor.kstimes@rediffmail.com
  kewalsach_times@rediffmail.com
- स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक ब्रजेश मिश्र द्वारा जय हिन्द प्रेस कंकड़बाग पटना-800020 से मुद्रित एवं पूर्वी अशोक नगर, रोड नं. 14, कंकड़बाग पटना-800020 से प्रकाशित, संपादक- ब्रजेश मिश्र। **RNI NO.- BIHBIL/2011/49252**
- पत्रिका में प्रकाशित समाचारों से संपादक की सहमति आवश्यक नहीं है।
- सभी प्रकार के वाद - विवादों का निपटारा पटना न्यायालय के अधीन होगा।
- आलेख पर किसी को कोई आपत्ति हो तो एक महीने के भीतर खंडन करें।
- किसी भी लेख के लिए रचनाकार/लेखक स्वयं जिम्मेवार होंगे।
- सभी पद अवैतनिक हैं।
- विज्ञापन की सत्यता की जाँच आप अपने स्तर पर कर लें।
- फोटो-समाचार साभार भी (माध्यम- इंटरनेट एवं अन्य स्त्रोत)
- कोई भी शिकायत हमारे पते पर लिखकर भेजें।
- **विज्ञापन का भुगतान चेक या ड्राफ्ट एवं RTGS से ही मान्य होगा।**
- भुगतान BRAJESH MISHRA को ही करें। किसी प्रतिनिधि को नगद न दें।
- A/C No. :- 20001817444
  BANK :- State Bank Of India
  IFSC Code :- SBIN0003564
  PAN No. :- AKKPM4905A

Contributions/Donations are Invited for the Welfare of Elders/Sr. Citizens for the establishment of
"APNA GHAR" A home for Sr. Citizens of Bihar & Jharkhand Proposed to be Constructed
Under the ageas of " KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN".
KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN
Registered Under the Indian Society Act 21, 1880
East Ashok Nagar, Road No.-14,
Kankarbagh, Patna - 800020
Contact No. :- 09431073769, 9955077308, 9308727077
E-mail :- kewalsachsamajiksansthan33@gmail.com
Reg. No. : 1141 (2009-10), Income Tax No. :12AA/2505-8 | 80 जी (5)/तक०/2013-14/1060-63

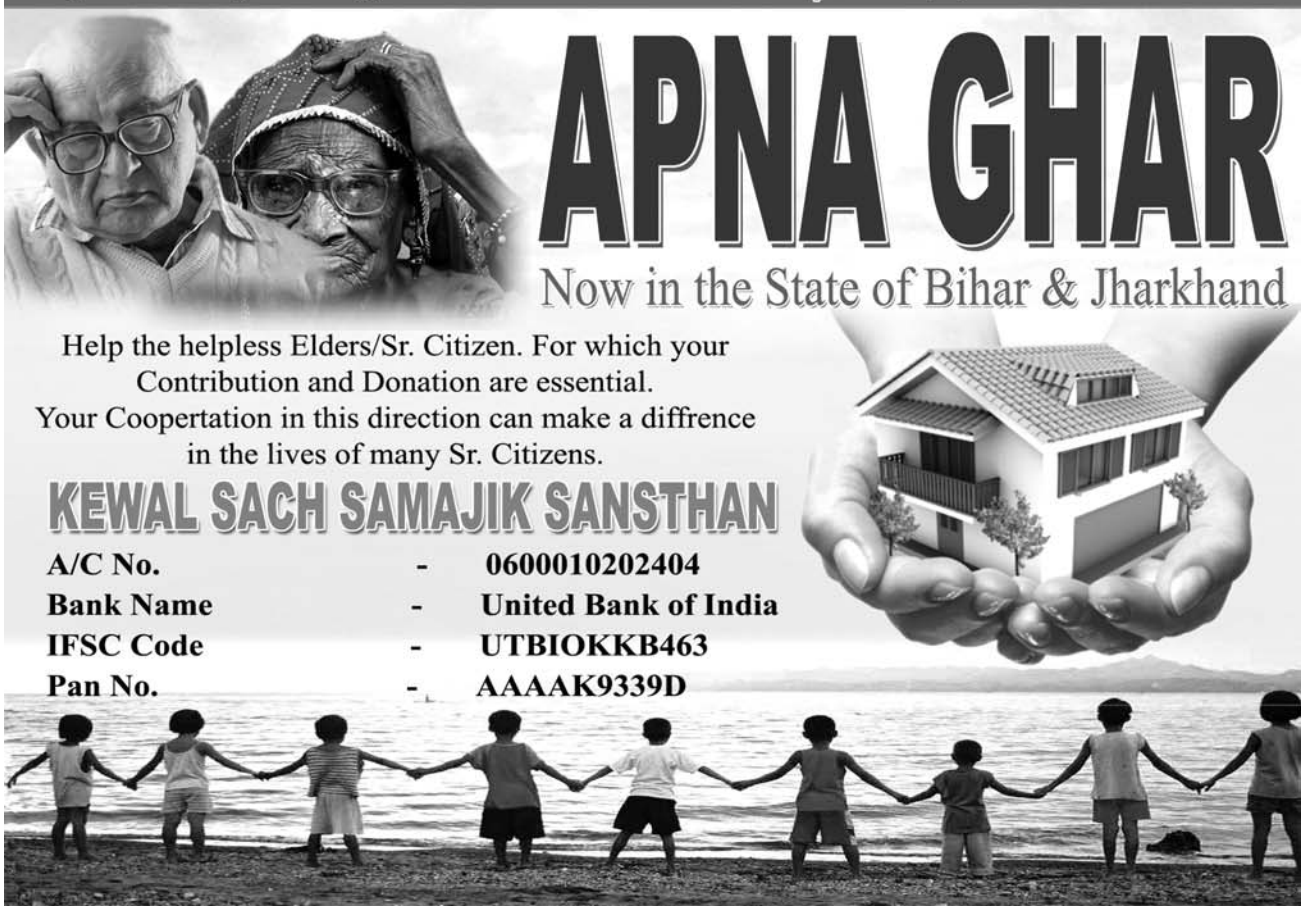
APNA GHAR
Now in the State of Bihar & Jharkhand
Help the helpless Elders/Sr. Citizen. For which your
Contribution and Donation are essential.
Your Coopertation in this direction can make a diffrence
in the lives of many Sr. Citizens.
KEWAL SACH SAMAJIK SANSTHAN
A/C No. - 0600010202404
Bank Name - United Bank of India
IFSC Code - UTBIOKKB463
Pan No. - AAAAK9339D

पीएम मोदी का रोड शो

क्या मिशन 2024 का बन रहा मास्टर प्लान?

भारत जोड़ो यात्रा का लोस चुनाव में दिखेगा असर!

● अमित कुमार

पीएम नरेंद्र मोदी ने 16 जनवरी को दिल्ली में मेगा रोड शो किया। ये रोड शो पटेल चौक से एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर तक निकाला गया। इस दौरान सड़कों के दोनों ओर पीएम मोदी का स्वागत करने के लिए आम लोगों और बीजेपी कार्यकर्ताओं की भीड़ उमड़ पड़ी। लोगों ने प्रधानमंत्री के काफिले पर फूलों की बारिश की। रोड शो के बाद पीएम मोदी एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर पहुंचे जहां उनका बीजेपी कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत किया। दिल्ली के एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर में बीजेपी की दो दिवसीय राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक का आयोजन होना था। इस बैठक में लोकसभा और विधानसभा का एजेंडे को तय किया जाना था। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा के साथ गृह मंत्री अमित शाह सहित अन्य केंद्रीय मंत्री, बीजेपी शासित राज्यों के मुख्यमंत्री और पार्टी के अन्य वरिष्ठ नेता इस बैठक में भाग लिए। वही बता दे कि गुजरात विधानसभा चुनाव में भारी जीत के बाद पार्टी की ये पहली बड़ी बैठक थी। इस बैठक में देश के मौजूदा मुद्दों और पार्टी के भीतर संगठनात्मक मुद्दों पर भी ध्यान देने की बाते कही गयी।

सवाल यह है कि आखिर पीएम मोदी ने क्यों किया रोड शो? ज्ञात हो कि भारतीय जनता पार्टी हमेशा चुनावी मोड में रहती है। पिछले साल सात राज्यों में चुनाव हुए। इनमें से पांच पर भारतीय जनता पार्टी की जीत हुई। गुजरात और उत्तर प्रदेश में भाजपा ने बंपर जीत

हासिल की। लेकिन हिमाचल प्रदेश, पंजाब और दिल्ली एमसीडी के नतीजों ने पार्टी को निराश भी किया। सबसे ज्यादा चौंकाने वाले नतीजे दिल्ली एमसीडी के ही रहे। यहां भारतीय जनता पार्टी को मिली हार ने कई बिंदुओं पर सोचने को मजबूर कर दिया है। आम आदमी पार्टी ने पिछले कुछ वर्षों में दिल्ली और आसपास के राज्यों में काफी पैठ बना ली है। पंजाब और दिल्ली एमसीडी के नतीजे इस ओर इशारा करते हैं। ऐसे में भाजपा कभी नहीं चाहेगी कि दिल्ली में पार्टी कमजोर हो। अभी दिल्ली में लोकसभा की सभी सीटों पर भाजपा का कब्जा है, लेकिन जिस तरह से आम आदमी पार्टी का ग्राफ बढ़ रहा है, वो भाजपा के लिए जरूर चिंताजनक है। इसलिए भाजपा हर तरह से दिल्ली में मजबूत होना चाहती है। पीएम मोदी का रोड शो इसी का एक हिस्सा हो सकता है। वही राष्ट्रीय कार्यकारिणी से जुड़ी खबरें ज्यादा मीडिया में जगह नहीं बना पाती हैं। बशर्ते कोई बड़ा बयान न आ गया हो या फिर कोई बड़ा फैसला न ले लिया गया हो। लेकिन पीएम मोदी का रोड शो सभी को अपनी तरफ आकर्षित करता है। इसलिए राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक को मेगा बनाने के लिहाज से भी प्रधानमंत्री का रोड शो करवाया जा सकता है। आने वाले दिनों में इस तरह के रोड शो का आयोजन बढ़ भी सकता है। एक सवाल और यह भी बनता है कि पीएम मोदी के रोड शो से भाजपा को कितना फायदा होगा? तो बता दें कि एक तो दिल्ली में कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ेगा। दिल्ली एमसीडी में आम आदमी पार्टी से मिली हार से भाजपा कार्यकर्ता निराश हैं। 15 साल तक एमसीडी में भाजपा का राज था और अब आम आदमी पार्टी ने सत्ता छीन ली है। आम आदमी पार्टी भाजपा को लेकर काफी अग्रेसिव रहती है। ऐसे में पीएम मोदी के इस रोड शो से फिर से भाजपा कार्यकर्ताओं में जोश आएगा और उनका मनोबल भी बढ़ेगा। दूसरा यह कि पीएम मोदी ने अपने इस रोड शो के जरिए दिल्ली की जनता को भी संदेश दिया है कि वह अभी भी उनके साथ हैं। इस बार दिल्ली एमसीडी चुनाव में पीएम मोदी ने कोई रैली और न ही कोई रोड शो किया था। अलग-अलग रिपोर्ट्स के अनुसार, इस बार एमसीडी चुनाव में भाजपा के वोटर्स घरों से ही नहीं निकले। इसके चलते पार्टी को काफी नुकसान हुआ। पीएम मोदी ने अपने रोड शो के जरिए उन लोगों को फिर से सक्रिय होने का भी संदेश दिया। तीसरी बात रही की राजनीतिक सुधार और फायदा तभी होता है जब किसी नेता या पार्टी की सभी चर्चा करें। चुनाव के बाद राजनीतिक चर्चाओं पर एक तरह से विराम ही लग गया था। अब पीएम मोदी ने अपने रोड शो के जरिए एक बार फिर से लोगों के बीच चर्चा शुरू करवा दी है। विपक्ष भी पीएम मोदी के इस रोड शो पर अलग-अलग तरह के बयान दे रहा है। इसका फायदा भी भाजपा को मिल सकता है।

गौरतलब है कि बीजेपी राष्ट्रीय पदाधिकारियों की बैठक दिल्ली में पार्टी के राष्ट्रीय कार्यालय में सुबह 10 बजे से दोपहर 2 बजे तक हुई, जबकि पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक 16 जनवरी को शाम चार बजे से 17 जनवरी की शाम चार बजे तक एनडीएमसी कन्वेंशन सेंटर में हुई। दिल्ली में भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में पार्टी ने मोदी के चेहरे, हिंदुत्व और गरीब कल्याण के मुद्दें पर अगामी विधानसभा चुनाव लड़ने का प्लान तैयार किया है। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में हिंदुत्व से जुड़े मुद्दों को और धार देने के

साथ मोदी सरकार की गरीबों के लिए चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं के लोगों तक तेजी से पहुंचाने पर फोकस करने की बात कही गई है। चुनावी राज्य में पीएम की कल्याणकारी योजनाओं के लाभर्थियों की संख्या बढ़ाने पर फोकस करने की बाता कही गई। अगर राष्ट्रीय कार्यकारिणी से बाहर आई खबरों का सियासी नजरिए से विश्लेषण किया जाए तो पाते हैं कि नरेंद्र मोदी के चेहरे और हिंदुत्व के सहारे भाजपा चुनाव मैदान में उतरने जा रही है। गौरतलब है कि हिंदुत्व और मोदी का चेहरे के सहारे ही भाजपा मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में उतरेगी। हिंदुत्व का एजेंडा जरूरी 'मजबूरी'-विधानसभा चुनाव में भाजपा के हिंदुत्व के एजेंडे पर उतरने के एक नहीं कई कारण है। हिंदुत्व का एजेंडा 2014 के बाद भाजपा की जीत की गारंटी बन गया है। भाजपा विधानसभा चुनाव में हिंदुत्व पर फोकस करके कर्नाटक और मध्यप्रदेश जैसे राज्यों में वर्तमान सरकारों के खिलाफ मौजूदा एंटी इंकमबेंसी की धार को कुंद करने की कोशिश करेगी। हिंदुत्व का एजेंडे को बढ़ाने के लिए भाजापा चुनावी राज्यों में कॉमन सिविल कोड जैसे मुद्दों पर भी आगे बढ़ती हुई दिखाई दे सकती है। कर्नाटक और मध्यप्रदेश जैसे बड़े राज्य जहां भाजपा सत्ता में काबिज है, वहां पार्टी हिंदुत्व के एजेंडे पर खुलकर बैंटिग कर बड़े वोट बैंक को अपनी ओर लुभाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ेगे। मध्यप्रदेश में पिछले दिनों उज्जैन में महाकाल लोक के भव्य लोकार्पण कार्यक्रम के जरिए पार्टी ने हिंदुत्व के सहारे अपना चुनावी शंखनाद कर ही चुकी है। श्री महाकाल लोक के जरिए भाजपा ने मध्यप्रदेश विधानसभा चुनाव में हिंदुत्व के एजेंडे को नई धार दे दी है। भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के दूसरे दिन पेश आर्थिक और सामजिक प्रस्ताव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तारीफ की गई। प्रस्ताव में कहा गया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों के चलते भारत दुनिया की पांच सबसे बड़ी इकोनॉमी वाले देशों में शामिल हो गया है। वहीं कार्यकारिणी की बैठक के पहले दिन पार्टी अध्यक्ष जेपी नड्डा ने गुजरात में भाजपा की ऐतिहासिक जीत का श्रेय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को दिया। इस साल होने वाले 9 राज्यों के विधानसभा चुनाव की रणनीति राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में तैयार की गई। राष्ट्रीय

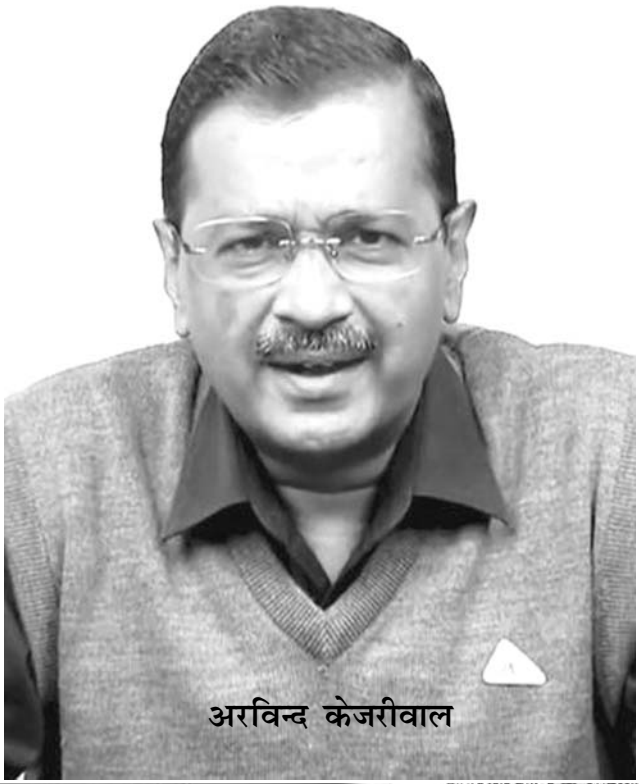
अरविन्द केजरीवाल

कार्यकारिणी की बैठक में विधानसभा चुनाव में भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे पर ही चुनाव में लड़ने पर एकमत से निर्णय लिया गया, इसलिए मोदी सरकार की गरीब कल्याण की योजनाओं पर और अधिक फोकस करने के निर्देश केंद्रीय नेतृत्व की ओर से दिया गया। अगर देखा जाए तो चुनावी राज्य मध्यप्रदेश में भाजपा संगठन और सरकार पूरी ताकत के साथ मोदी के चेहरे की ब्रॉडिंग पर फोकस कर रही है। विधानसभा चुनाव से पहले लोगों तक मोदी सरकार की गरीब कल्याण की योजनाओं को जनता तक पहुंचाने के लिए प्रदेश भाजपा सरकार लगातार बड़े अभियान चला रही है। शिवराज सरकार एक फरवरी से 15 फरवरी तक प्रदेश में विकास यात्राएं निकालने जा रही है। विकास यात्रा में भी मोदी सरकार की गरीब कल्याण की योजनाओं पर फोकस किया जाएगा।

बहरहाल, एक ओर भारतीय जनता पार्टी हिन्दुत्व कार्ड खेलते आयी है और आगे की भी यही प्लानिंग है, जैसा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक से जो बात बाहर निकलकर आये। किन्तु वही राष्ट्रीय कार्यकारिणी की दो दिन चली बैठक में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पार्टी को मुस्लिम समुदाय की बीच पकड़ मजबूत करने का भी सीधा संदेश दिया है। दो दिन की कार्यकारिणी की बैठक के समापन सत्र को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि पार्टी नेता मुस्लिम समुदाय के बारे में गलत बयानबाजी ना करें, बल्कि देशभर में मुसलमानों के पास जाएं और उनसे बात करें। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बोहरा और पसमांदा मुसलमानों से खास तौरपर बातचीत करने के निर्देश पार्टी नेताओं और कार्यकर्ताओं को दिए। इसके साथ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पार्टी कार्यकर्ताओं को सीधा संदेश देते हुए कहा कि कोई वोट दे या ना दे लेकिन उनसे जरूर मिलें। इससे पहले पसमांदा मुस्लिमों के लिए भाजपा स्नेह यात्रा शुरु करेगी। दिल्ली में हुई भाजपा राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक से भाजपा ने एक तरह से मिशन 2024 का शंखनाद कर दिया है और मिशन 2024 में पार्टी की नजर मुसलमानों के एक वर्ग के वोटबैंक पर टिकी हुई है। मिशन 2024 को लेकर भाजपा की नजर उत्तर प्रदेश सहित अन्य राज्यों में मुस्लमानों के उस वोटबैंक पर है, जिसे पसमांदा कहा जाता है। दिगर बात है कि पीएम मोदी की मुसलमानो से बात करने और उनसे संपर्क बढ़ाने के निर्देश के पीछे असली कहानी 2024 से जुड़ती है। मिशन 2024 के लिए भाजपा ने मुस्लिम वोटरों को अपनी ओर रिझाने की रणनीति पर काम शुरु कर दिया है। दरअसल मुस्लिम वोटरों को साध कर भाजपा 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए अपने 50 फीसदी से उपर वोट शेयर प्राप्त करने के लक्ष्य की राह को आसान बनाना चाहती है। दरअसल पिछले साल उत्तर प्रदेश में हुए विधानसभा चुनाव में भाजपा ने कई मुस्लिम बाहुल्य सीटों पर जीत हासिल की। इसके साथ चुनाव के आंकड़े बताते है कि पश्चिमी और पूर्वी उत्तर प्रदेश में बड़ी संख्या में मुस्लिम वोटर भाजपा के साथ गया। उत्तरप्रदेश विधानसभा चुनाव नतीजों ने भाजपा को मुस्लिम समुदाय के एक वर्ग में पैठ बनाने का सीधा संदेश दे दिया। अब सवाल यह है कि पसमांदा मुसलमान पर भाजपा की निगाहें क्यों? तो पसमांदा समुदाय के लोगों का दावा है कि भारत की पूरी मुस्लिम आबादी में उनकी हिस्सेदारी 80 फीसदी है। ऐसे में भाजपा ने मिशन 2024 के लिए पसमांदा मुस्लिमों को अपने खेमे में लाने पर पूरा जोर दे रही है। पसमांदा से आशय पिछड़े मुसलमानों से है और भाजपा की नजर अब इसी वोट बैंक पर है। देश में सबसे ज्यादा मुस्लिम आबादी उत्तर प्रदेश में है और राज्य में

पसमांदा मुस्लिमों की संख्या 3 करोड़ से अधिक है। मिशन 2024 को फतह करने के लिए भाजपा को उत्तर प्रदेश में बड़ी जीत हासिल करना जरूरी है। ऐसे में पसमांदा मुसलमानों को साधकर भाजपा अपने वोट शेयर बढ़ाना चाह रही है। मुस्लिम समुदाय में पसमांदा मुसलमानों का वर्ग गरीब तबके से आते है और वह केंद्र और राज्य की भाजपा सरकार की लाभार्थी योजना से प्रभावित था और उसने उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में भाजपा को वोट दिया। उत्तर प्रदेश अल्पसंख्यक मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष कुंवर बासित अली कहते है कि भाजपा सरकार की हर योजनाओं में पसमांदा समाज को बड़ी भागीदारी मिली है। पीएम आवास योजना सहित सरकार की गरीब कल्याण की सभी योजनाओं में पसमांदा समाज को बड़ा लाभ मिला है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का लक्ष्य पसमांदा मुसलमानों को भाजपा के खेमे में लाना है। पसमांदा मुसलमानों को आर्थिक रूप से मजबूत कर सरकार की योजनाओं का लाभ दिलवाकर भाजपा इस बड़े समुदाय को अपने साथ लाने की कोशिश में है जिससे 2024 में उसके 50 फीसदी वोटर शेयर का लक्ष्य पूरा हो सके। उत्तर प्रदेश में भाजपा के बड़े अल्पसंख्यक चेहरे और पूर्व मंत्री मोहसिन रजा कहते है कि पसमांदा मुसलमान दलित और ओबीसी मुसलमान हैं, जिनमें मुस्लिम समुदाय का 75 से 80 प्रतिशत हिस्सा है। पार्टी पसमांदा समुदाय को यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि भाजपा उनके जीवन के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध है। मुस्लिम समुदाय के साधने का सीधा कनेक्शन भाजपा के मिशन दक्षिण से भी जुड़ा है। इस साल तेलंगाना में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर भाजपा अपनी पूरी ताकत लगा दी है और भाजपा के मिशन तेलंगाना के लिए मुस्लिम वोट एक जरूरी मजबूरी है। अगर भाजपा को तेलंगाना जीतना है तो उसे मुस्लिम वोटर में सेंध लगानी होगी। अगर वोटरों के आंकडें को देखा जाए तो तेलंगाना की साढ़े तीन करोड़ की आबादी में से 12 फीसदी मुस्लिम वोटर विधानसभा चुनाव में निर्णायक भूमिका निभाता है। 2018 के विधानसभा चुनाव में मुस्लिम वोटर बड़ी संख्या में टीआरएस के साथ गए थे। इसके साथ हैदाराबाद के शहर इलाको में मुस्लिम वोटर असदुद्दीन ओवैसी की पार्टी की भी पकड़ है। ऐसे में अगर भाजपा को दक्षिण के इस किले में सेंध लगानी है तो उस मुस्लिम वोटर को भी साधना होगा।

गौरतलब हो कि केंद्रीय

कुंवर बासित अली

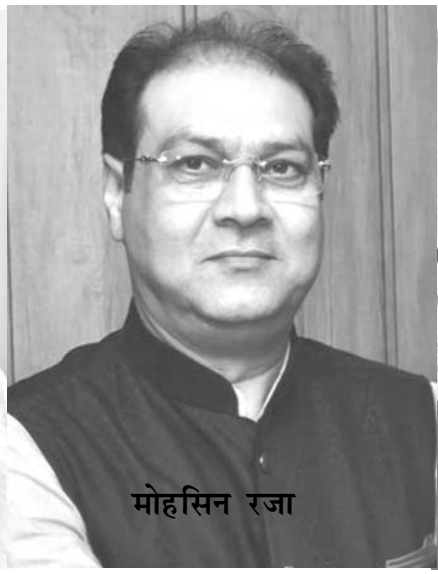
मोहसिन रजा

असदुद्दीन ओवैसी

गृहमंत्री और पूर्व भाजपा अध्यक्ष अमित शाह ने एक बड़ा बयान देते हुए कहा कि भाजपा 2024 का चुनाव जेपी नड्डा की अध्यक्षता में लड़ेगी। उन्होंने कहा कि भाजपा को 2019 से बड़ी जीत मिलेगी और नरेंद्र मोदी फिर भारत के प्रधानमंत्री बनेंगे। शाह ने कहा कि नड्डा का कार्यकाल जून 2024 तक के लिए बढ़ाया गया है। पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में यह फैसला किया गया है। उन्होंने कहा कि नड्डा ने पार्टी अध्यक्ष के रूप में अच्छा काम किया। उनके नेतृत्व में पार्टी ने कई चुनाव जीते। उल्लेखनीय है कि जेपी नड्डा ने 17 जून 2019 को कार्यकारी अध्यक्ष बने थे। 20 जनवरी 2020 को उन्हें पूर्ण अध्यक्ष बनाया गया था। वही नड्डा के राष्ट्रीय अध्यक्ष पद को आगे बढ़ाने के बाद से और भी जिम्मेदारियां बढ़ गई है। इस बाबत भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने अगले साल होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले 2023 में नौ राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों के महत्व को रेखांकित करते हुए पार्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी से इन सभी चुनावों में जीत दर्ज करने के लिये कमर कसने का आह्वान किया। भाजपा की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की 2 दिवसीय बैठक के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते अपने अध्यक्षीय भाषण में नड्डा ने यह बात कही। केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद ने नड्डा के भाषण की जानकारी यहां आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में मीडिया से साझा की। उनके मुताबिक नड्डा ने कहा कि साल 2023 हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है और हमें 9 प्रदेशों में चुनाव लड़ना है। प्रसाद ने बताया कि राष्ट्रीय अध्यक्ष ने पूरी कार्यकारिणी से आह्वान किया कि चुनाव के लिए कमर कस लें, हमें सभी

नौ राज्यों में जीत दर्ज करनी है। केंद्र की सत्तारूढ़ पार्टी अपने संगठन को मजबूत करने के लिए पिछले कुछ समय से कई सारी कवायदें कर रही हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वे 2024 में केंद्र में तीसरे कार्यकाल के लिए सत्ता में वापस आए। यहां स्थित नई दिल्ली नगरपालिका परिषद् के कन्वेंशन सेंटर में नड्डा ने अपने संबोधन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार के तहत भारत की प्रगति की सराहना की। पार्टी अध्यक्ष ने कहा कि आज प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था, मोबाइल फोन का दूसरा सबसे बड़ा निर्माता, ऑटोमोबाइल क्षेत्र में तीसरा सबसे बड़ी निर्माता

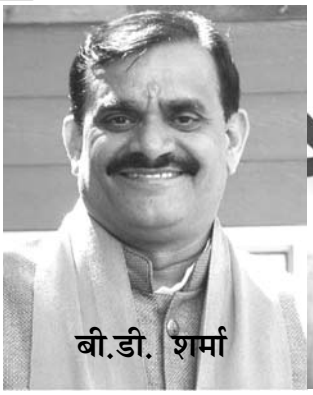
बी.डी. शर्मा

नरोत्तम मिश्रा

मोहन यादव

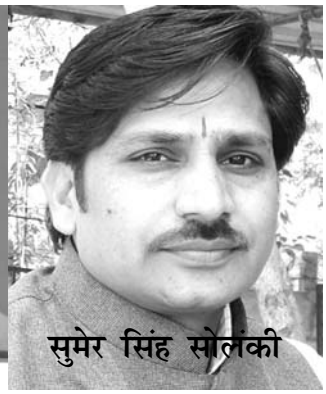
सुमेर सिंह सोलंकी

बन गई है। उन्होंने कहा कि पहले जहां हर दिन 12 किलोमीटर राजमार्ग बनाया जाता था, वहीं आज यह बढ़कर 37 किलोमीटर हो गया है। उन्होंने कहा कि देश ने मुफ्त अनाज सहित कई कल्याणकारी योजनाओं के साथ गरीबों को सशक्त बनाने के लिए भी काम किया है। नड्डा ने हालिया गुजरात विधानसभा चुनाव में पार्टी की जीत को असाधारण और ऐतिहासिक बताते हुए इसकी प्रशंसा की और कहा कि 182 सदस्यीय विधानसभा में 150 से अधिक सीट जीतना एक बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने कहा कि पार्टी हिमाचल प्रदेश में कांग्रेस से हार गई, लेकिन दोनों दलों के बीच मतों का अंतर एक प्रतिशत से भी कम रहा। वही राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में इस साल मध्यप्रदेश में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर भी अहम राणनीति तैयार हुई। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक में मध्यप्रदेश से मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान, प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा, गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा, प्रदेश प्रभारी मुरलीधर राव, संगठन महामंत्री हितानंद समेत अन्य नेता शामिल रहे। बता दें कि राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के बाद मध्यप्रदेश में सरकार से लेकर संगठन तक बड़े बदलाव के कयास लगाए जा रहे है। सरकार और संगठन में संभावित बदलाव को लेकर भोपाल से लेकर दिल्ली तक अटकलों का बाजार गर्म है। राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक के ठीक समय दिल्ली में एक समाचार पत्र से बात करते हुए प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि वह पार्टी के हर निर्णय का सम्मान करेंगे और पार्टी नेतृत्व कहेगा तो मैं दरी बिछाने के लिए भी तैयार हूं। मुख्यमंत्री ने कहा कि वह पार्टी कार्यकर्ता है और वह अपने लिए खुद कोई भूमिका तय नहीं कर सकते है। गौरतलब है कि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने पहली बार ऐसा बयान नहीं दिया है। वह पहले भी राष्ट्रीय राजनीति में जाने की संभावना को खारिज करते हुए दरी बिछाने की बात कह चुके है। दूसरी तरफ राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने साफ कर दिया है कि किसी भी राज्य के चुनाव में हार अब मंजूर नहीं है। ऐसे में मध्यप्रदेश में चुनाव से पहले केंद्रीय नेतृत्व की ओर से कराए गए सर्वे में साफ हो चुका है कि प्रदेश में भाजपा की अंदरूनी हालत ठीक नहीं है और पार्टी ने अगर बड़े फैसले नहीं लिए तो इसका खामियाजा चुनाव में उठाना पड़ सकता है। सूत्र बताते हैं कि भाजपा सर्वे में तीन अंकों की जगह दो अंकों में सिमटती हुई दिख रही है। मध्यप्रदेश में होने वाले संभावित बदलाव को लेकर पार्टी का शीर्ष नेतृत्व और संघ के प्रमुख नेताओं के बीच भी मंथन का दौर चल रहा

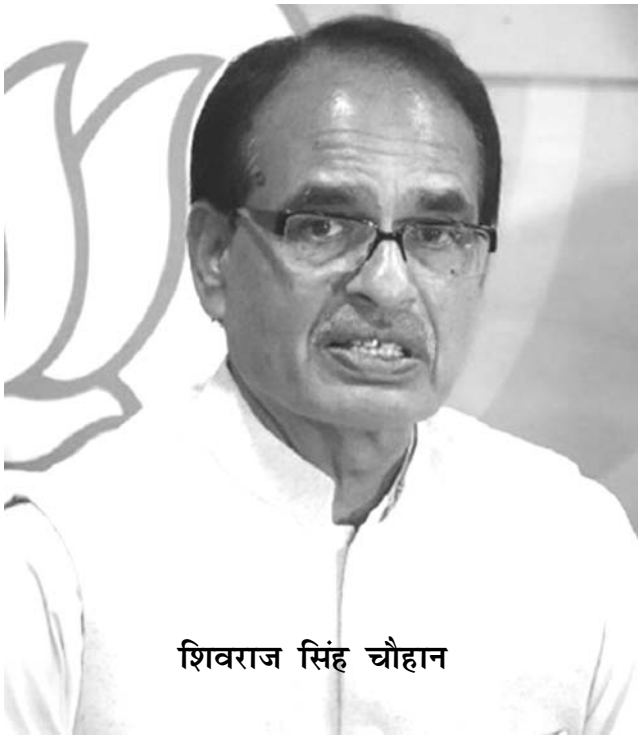
शिवराज सिंह चौहान

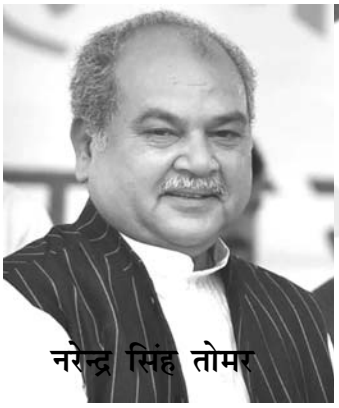
नरेन्द्र सिंह तोमर

कैलाश विजयवर्गीय

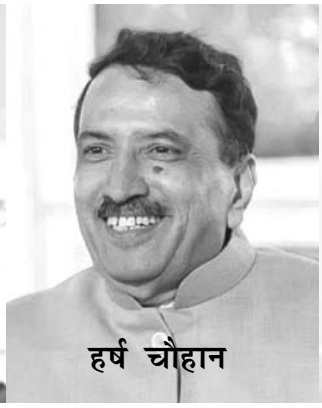
हर्ष चौहान

ओम प्रकाश माथुर

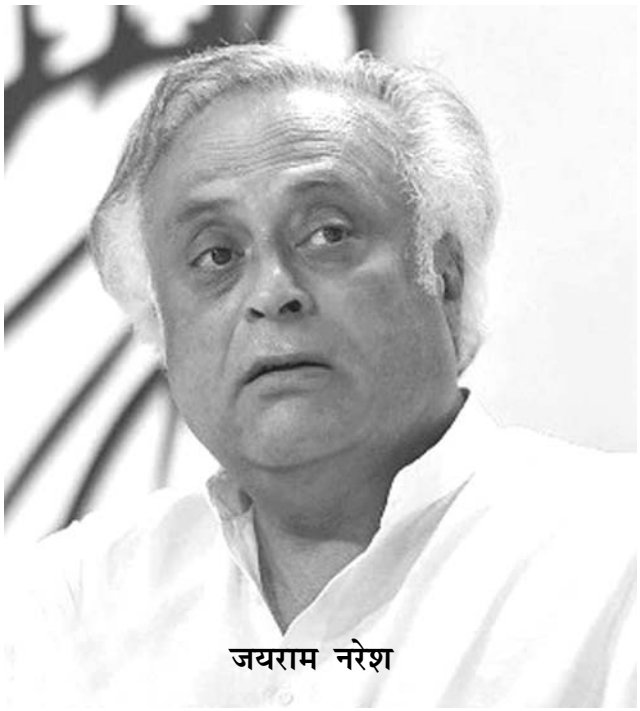

जयराम नरेश

है। दिगर बात है कि गुजरात में भाजपा ने जिस फॉर्मूले के आधार पर प्रचंड जीत हासिल की है, अगर वह फॉर्मूला मध्यप्रदेश में लागू होता है तो संगठन से लेकर सरकार तक कई बड़े बदलाव होने तय है। गुजरात फॉर्मूले में सत्ता से लेकर संगठन का परफारमेंस बदलाव का प्रमुख आधार बनेगा। इसमें सबसे पहले सरकार के उन मंत्रियों पर तलवार लटकी नजर आ रही है जो लंबे समय से सरकार में काबिज है। ऐसे में सरकार के नए चेहरे के साथ चुनाव में जाने की रणनीति पर अगर पार्टी हाईकमान आगे बढ़ता है तो कई मंत्रियों की छुट्टी तय है। गुजरात मॉडल से उन दिग्गजों की विदाई भी तय है, जो 70 की उम्र पार कर चुके है। ऐसे में आने वाले समय में मंत्रिमंडल में बड़ी सर्जरी देखने को मिल सकती है। किन्तु सवाल यह है कि अगर बदलाव हुआ तो किसका कद बढ़ेगा? संगठन और सरकार में होने वाले संभावित बदलाव के बीच कई नेताओं के नाम पर अटकलों का दौर भी तेज है। अगर भाजपा का केंद्रीय नेतृत्व मध्यप्रदेश में बदलाव की ओर बढ़ता है तो केंद्रीय मंत्री नरेंद्र सिंह तोमर, राज्यसभा सांसद डॉ० सुमेर सिंह सोलंकी, राष्ट्रीय महासचिव कैलाश विजयवर्गीय और राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष हर्ष चौहान को प्रदेश में बड़ी जिम्मेदारी दी जा सकती है। वहीं बदलाव के दौर में सूबे के गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा और मोहन यादव जैसे नेताओं का कद भी बढ़ सकता है। वहीं चुनावी साल में पार्टी संगठन में बदलाव होने पर प्रदेश भाजपा को नया प्रभारी मिल सकता है। ओम प्रकाश माथुर जैसे दिग्गज नेताओं को फिर से प्रदेश में बड़ी जिम्मेदारी दी जा सकती है।

बताते चले कि भाजपा के तरफ से पीएम मोदी का रोड शो और फिर दो दिवसीय कार्यकारिणी बैठक पर कांग्रेस ने निशाना साधा है। निशाना साधते हुए कांग्रेस ने कहा है कि भाजपा के इस खोखले और नाटकीय आयोजन से केवल प्रधानमंत्री के ढोलकियों को ही व्यस्त रखा जा सकता है। कांग्रेस ने पीएम मोदी के रोड शो को लेकर तंज कसा। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा से आतंकित भाजपा पीएम मोदी का इस्तेमाल बार-बार रोड शो में कर रही है। राहुल के पैदल मार्च को पीएम मोदी की तरह टीवी चौनलों ने कवर नहीं किया, लेकिन इसके बावजूद राहुल इस यात्रा के जरिए जनमानस पर छा गए हैं। राहुल की छवि इस यात्रा ने बदल दी है। तमाम सर्वे बता रहे हैं कि राहुल की लोकप्रियता बढ़ी है। भाजपा पर निशाना साधते हुए कांग्रेस के महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि भारत जोड़ो यात्रा की सफलता से डरे हुए असुरक्षित प्रधानमंत्री ने भाजपा को तमाशे जैसा रोड शो आयोजित करने को कहा है जो कल राष्ट्रीय राजधानी में थोड़ी दूरी तय करेगा। जयराम रमेश ने कहा कि ऐसे खोखले, नाटकीय आयोजन सिर्फ प्रधानमंत्री के ढोलकियों को व्यस्त रख सकते हैं। कांग्रेस लगातार दावा कर रही है कि प्रधानमंत्री मोदी कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा की सफलता से डरे हुए हैं। दूसरी तरफ कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ ने भारत जोड़ो यात्रा को लेकर राहुल गांधी के नेतृत्व की सराहना करते हुए कहा कि राहुल गांधी वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में विपक्ष का चेहरा ही नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री पद का चेहरा भी होंगे। उन्होंने यह भी कहा भी कहा कि राहुल गांधी सत्ता की नहीं, बल्कि जनता की राजनीति

करते हैं, ऐसे नेता को देश के लोग खुद-व-खुद सिंहासन पर बैठा देते हैं। उनके मुताबिक, दुनिया के इतिहास में 3500 किलोमीटर से अधिक की पैदल यात्रा किसी व्यक्ति ने नहीं की है। भारत देश के लिए इतनी शहादत किसी परिवार ने नहीं दी है, जितनी गांधी परिवार ने दी है। हाल के दिनों में यह पहली बार है, जब कांग्रेस के किसी वरिष्ठ नेता ने यह कहा है कि अगले लोकसभा चुनाव में राहुल गांधी प्रधानमंत्री पद का चेहरा होंगे। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष 76 वर्षीय कमलनाथ ने कहा, जब 'भारत जोड़ो यात्रा' तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक जैसे दक्षिण भारत के राज्यों से गुजर रही थी, तो भाजपा ने दुष्प्रचार किया कि महाराष्ट्र में यात्रा विफल हो जाएगी। जब महाराष्ट्र में यात्रा को और ज्यादा समर्थन मिला, तो कहा कि हिंदी पट्टी में दक्षिण भारत जैसा समर्थन नहीं मिल पाएगा, लेकिन मध्य प्रदेश पहुंचकर यात्रा ने सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। उन्होंने यह भी कहा, अब तो सबने राजस्थान और उसके बाद दिल्ली में भी देख लिया है कि राहुल गांधी जी की यात्रा किस कदर लोकप्रिय हो रही है। उन्होंने कहा कि मध्य प्रदेश में 'भारत जोड़ो यात्रा' में कांग्रेस के कार्यकर्ता ही शामिल नहीं हुए, बल्कि आम जनता और खासकर नौजवानों ने बढ़-चढ़कर भागीदारी की। मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा, राहुल गांधी स्पष्ट कर चुके हैं कि 'भारत जोड़ो यात्रा' कोई राजनीतिक यात्रा नहीं है। इस यात्रा का उद्देश्य

भारत को तोड़ने वाली शक्तियों को पराजित करना और नफरत को समाप्त करना है। जहां तक चुनाव का सवाल है, तो मध्य प्रदेश में प्रचंड बहुमत से कांग्रेस की सरकार बननी तय है। 'भारत जोड़ो यात्रा' के बाद कार्यकर्ता दोगुने उत्साह से कार्य कर रहे हैं।

सनद् रहे कि नोबेल पुरस्कार से सम्मानित अमर्त्य सेन ने कहा कि यह सोचना भूल होगी कि 2024 का लोकसभा चुनाव एकतरफा तरीके से भारतीय जनता पार्टी के पक्ष में होगा। उन्होंने कहा कि तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख ममता बनर्जी में भारत का अगला प्रधानमंत्री बनने की क्षमता है। उन्होंने कहा कि आगामी आम चुनाव में क्षेत्रीय दलों की भूमिका साफतौर पर महत्वपूर्ण होगी। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री ने यह भी कहा कि तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख ममता बनर्जी में भारत का अगला प्रधानमंत्री बनने का माद्दा है, लेकिन अभी यह स्थापित नहीं हुआ है कि क्या पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री में भाजपा के प्रति जनता की निराशा की ताकतों को खींचने की क्षमता है। सेन ने कहा कि मुझे लगता है कि क्षेत्रीय दलों की भूमिका स्पष्ट रूप से महत्वपूर्ण है। मुझे लगता है कि द्रमुक एक महत्वपूर्ण दल है, टीएमसी निश्चित तौरपर महत्वपूर्ण है और समाजवादी पार्टी का भी कुछ प्रभाव है, लेकिन क्या इसे बढ़ाया जा सकता है, यह मुझे नहीं मालूम। यह मानने से इनकार करना एक भूल होगी कि कोई अन्य पार्टी भाजपा का स्थान नहीं ले सकती है, क्योंकि उसने खुद को ऐसी पार्टी के रूप में स्थापित किया है, जिसका शेष देश के मुकाबले हिंदुओं के प्रति झुकाव है। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (राकांपा) और जनता दल (यूनाइटेड) समेत कई दलों के नेताओं ने 2024 में लोकसभा चुनावों के लिए कांग्रेस को शामिल करते हुए नया गठबंधन बनाने का आह्वान किया है। उन्होंने जोर दिया है कि द्विध्रुवीय मुकाबले से भाजपा की हार सुनिश्चित होगी। सेन ने कहा कि भाजपा ने भारत के दृष्टिकोण को काफी हद तक कम किया है। उसने महज हिंदू भारत और हिंदी भाषी भारत की विचारधारा को काफी मजबूती से उठाकर भारत की समझ को संकीर्ण कर दिया है। अगर आज भारत में भाजपा का कोई विकल्प नहीं पेश किया जाता है, तो यह दुख की बात होगी। उन्होंने कहा कि अगर भाजपा मजबूत और शक्तिशाली लगती है, तो उसकी कमजोरियां भी हैं। मुझे लगता है कि अन्य राजनीतिक दल अगर वाकई कोशिश करें, तो एक चर्चा शुरू कर सकते हैं। ममता एकीकृत तरीके से भाजपा के खिलाफ जनता की निराशा की ताकतों को खींच सकती हैं। सेन ने 2024 का लोकसभा चुनाव जीतने की कांग्रेस की क्षमता पर संदेह जताया। उन्हें लगता है कि कांग्रेस कमजोर हो गई है। हालांकि उन्होंने कहा कि वह इकलौती पार्टी है, जो अखिल भारतीय दृष्टिकोण दे सकती है। ऐसा लगता है कि कांग्रेस काफी कमजोर हो गई है और मुझे नहीं पता कि कोई कांग्रेस पर कितना निर्भर रह सकता है। वहीं दूसरी ओर कांग्रेस निश्चित तौर पर अखिल भारतीय दृष्टिकोण देती है, जो कोई दूसरी पार्टी नहीं कर सकती। लेकिन कांग्रेस के भीतर विभाजन है। सनद् रहे कि नोबेल पुरस्कार विजेता अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन के बयान पर केंद्रीय

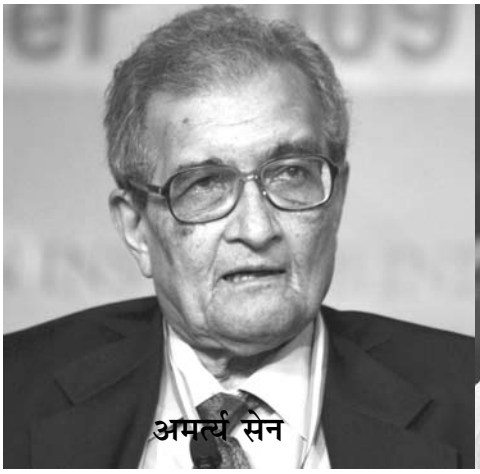

अमर्त्य सेन

ममता बनर्जी

धर्मेन्द्र प्रधान

मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने जवाब देते हुए कहा है कि देश में प्रधानमंत्री पद के लिए कोई वैकेंसी नहीं है। देश की जनता ने पिछले 2 बार से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर भरोसा जताया है। 2024 में भी जनता मोदी जी को दायित्व देगी इसमें कोई संदेह नहीं है। लोकतंत्र में विचार देने के लिए किसी पर रोक नहीं है। जनता ने पिछले 2 कार्यकाल से पीएम मोदी पर भरोसा जताया है। 2024 के चुनाव में भी बीजेपी की जीत होगी।

लोकसभा चुनाव नजदीक आने के पूर्व विपक्षी दलों द्वारा सत्तारूढ़ पार्टी के विरुद्ध एकजुट होने और सत्ता में पहुंचने की कवायद नई नहीं है। बावजूद इसमें देश के रुचि बनी रहती है। इस समय देश के दो मुख्यमंत्रियों बिहार के नीतीश कुमार तथा तेलंगाना के के. चंद्रशेखर राव नरेंद्र मोदी और भाजपा विरोधी मोर्चा के लिए सबसे ज्यादा कवायद करते देखे जा रहे हैं। नीतीश ने अपनी पार्टी की बैठक में साफ कहा कि हम एकजुट हो गए तो ये लोग सत्ता से चले जाएंगे। पिछले दिनों जदयू की बैठक में उनकी पार्टी के अध्यक्ष ललन सिंह ने कहा कि हम बिहार की सभी 40 लोकसभा सीट जीतेंगे। बैठक में बाहर से दिखता पूरा माहौल नीतीश को राष्ट्रीय स्तर पर नरेंद्र मोदी विरोधी मोर्चे के नेतृत्व करने के उत्साही वातावरण से भरा था। विपक्ष और सत्ता पक्ष की राजनीति का लंबा अनुभव रखने वाले जदयू के महासचिव के.सी. त्यागी ने उसी बैठक में कहा कि नीतीश कुमार को 6 महीने के लिए आप लोग दिल्ली भेज दो, फिर देखो कैसे पूरा माहौल बदल जाता है। चंद्रशेखर राव ने नई दिल्ली में अपनी पार्टी कार्यालय की शुरुआत की, जिसमें अखिलेश यादव शामिल हुए। अखिलेश यादव ने नीतीश कुमार का भी समर्थन किया। चंद्रशेखर राव अपनी पार्टी का नाम तेलंगाना राष्ट्र समिति से बदलकर भारत राष्ट्र समिति यानी बीआरआर कर चुके हैं और चुनाव आयोग ने उसे स्वीकार भी किया है। वे इसके पहले कई राज्यों की राजधानियों का दौरा कर नेताओं से मुलाकात कर चुके हैं। लोकसभा चुनाव में अब सवा साल से भी कम समय बचा है। प्रश्न है कि इन गतिविधियों के आधार पर नरेंद्र मोदी और भाजपा विरोधी राजनीति की क्या तस्वीर खींची जा सकती है? नीतीश कुमार ने भाजपा से अलग होने की घोषणा के साथ ही इस दिशा में बयान आरंभ कर दिया था। वो बाद में दिल्ली आए और कई नेताओं से मिले। लालू प्रसाद यादव के साथ सोनिया गांधी से भी उनकी मुलाकात हुई। 2013 में भाजपा से अलग होने के बाद नीतीश ने इस तरह विपक्षी गोलबंदी की कोशिश नहीं की थी। केवल बिहार में मोदी विरोधी आक्रामक अभियान चलाया था। 2014 के चुनाव में क्या हुआ यह सामने है। हालांकि तब उनके साथ राजद, कांग्रेस, कम्युनिस्ट पार्टियां आदि नहीं थी। इस बार वे इन सब दलों के गठबंधन के नेता हैं। उस समय उनकी पार्टी के लोग बताते थे कि अगर हमने लोकसभा में 28 से 30 सीटें जीत ली तो नीतीश प्रधानमंत्री के दावेदार होंगे। उन्हें यह भी लगता था कि भाजपा को बहुमत नहीं मिलेगा और पार्टी में भाजपा मोदी विरोधी उस स्थिति में नीतीश को नेता स्वीकार कर सकते हैं। अगर गैर भाजपा सरकार की नौबत आई तो विपक्ष उन्हें स्वीकार करने से गुरेज नहीं करेगा, क्योंकि उनकी छवि सुशासन बाबू की बन गई है। इस बार भी उनकी पार्टी के नेता यही कह रहे हैं कि अगर हमने बिहार से भाजपा की सीटें कम कर दी तो इसका असर दूसरे राज्यों में हुआ तो ये सत्ता से बाहर होंगे, विपक्ष की सरकार बनेगी और नीतीश कुमार प्रधानमंत्री पद के प्रबल दावेदार होंगे। हालांकि सार्वजनिक तौर पर नीतीश कहते हैं कि वे प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नहीं हैं। यही नहीं वे बिहार में भी घोषित कर चुके हैं कि आगे तेजस्वी जी को ही नेतृत्व करना है। कई कार्यक्रम में उन्होंने

शरद पवार

अखिलेश यादव

उद्धव ठाकरे

ललन सिंह

तेजस्वी यादव

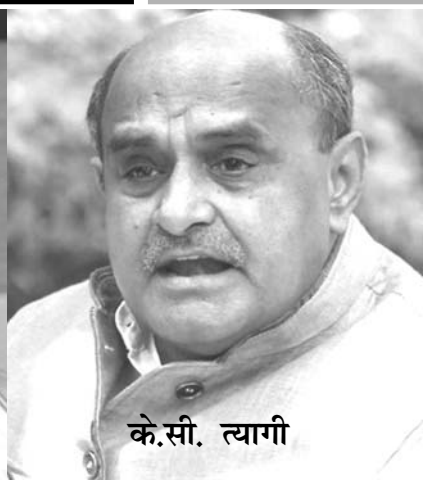
के.सी. त्यागी

यह घोषित किया और कहा कि 2025 का चुनाव तेजस्वी के नेतृत्व में लड़ा जाएगा। जाहिर है, इसके द्वारा उन्होंने संदेश दिया कि वो केंद्रीय राजनीति में अभिरुचि रखते हैं तथा उनका लक्ष्य मोदी सरकार को सत्ता से हटाना है और राज्य का नेतृत्व तेजस्वी करें। इससे गठबंधन की एकता बनी रहेगी तथा दूसरी ओर उन्हें लगता है कि देश भर के विपक्ष का विश्वास उनकी ओर बढ़ेगा कि वो इस विषय को लेकर गंभीर हैं। हालांकि अभी तक इसका ऐसा असर अन्य दलों पर नहीं देखा गया जिसकी उम्मीद शायद जनता दल यू में नीतीश कुमार और उनके समर्थक कर रहे होंगे। नीतीश कुमार की इस राजनीति का महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि अभी तक विपक्ष के किसी बड़े नेता ने स्वयं आकर उनसे विपक्षी एकता पर बातचीत तक नहीं की है। उद्धव ठाकरे के सुपुत्र आदित्य ठाकरे अवश्य वहां गए थे, लेकिन उन्होंने पहली मुलाकात तेजस्वी यादव से की और बाद में उनके साथ नीतीश से मिलने गए।

के. चंद्रशेखर राव जब पटना पहुंचे तो पत्रकार वार्ता के बीच में ही नीतीश खड़े हो गए और चंद्रशेखर राव बार-बार कहते रहे कि बैठिये, बैठिये। बड़ा अजीबोगरीब दृश्य था। स्वयं बिहार की राजनीति में भी इस समय कुछ दूसरे प्रकार के संकेत मिलने लगे हैं। पिछले वर्ष बोचहां विधानसभा उपचुनाव में भाजपा की उम्मीदवार बुरी तरह पराजित हुई थी। यह बिहार के सामाजिक समीकरण में कुछ जातियों का राजग के विरुद्ध विद्रोह था, क्योंकि उन्हें लगता था कि लंबे समय से हम भाजपा को और उसके कारण नीतीश को समर्थन दे रहे हैं लेकिन राजनीति में उन्हें महत्त्व नहीं मिलता। इसके आधार पर जदयू के नेताओं ने मान लिया कि राज्य में भाजपा विरोधी वातावरण है, जबकि सच यह नहीं था। बाद में हुए तीन उपचुनावों परिणाम में से दो भाजपा जीत गई। हाल में कुढनी विधानसभा उपचुनाव का परिणाम सत्तारूढ़ जदयू राजद गठबंधन को चौंकाने वाला था। भाजपा अकेले इस गठबंधन के विरुद्ध चुनाव जीत सकती है, इसकी उन्हें कल्पना ही नहीं थी, जबकि मतदाताओं ने संदेश दे दिया है। इससे भाजपा का उत्साह बढ़ा है एवं वह सत्तारूढ़ गठबंधन के विरुद्ध आक्रामक है। जहरीली शराब से हुई मौत के मामले में उसका तेवर देखने लायक है। कम से कम इन उप चुनाव परिणामों के आधार पर यह मानना कठिन है कि लोकसभा चुनाव में जदयू राजद आदि की आकांक्षाएं उसी रूप में साकार होंगी जैसी वे कल्पना कर रहे हैं। हां, तेलंगाना के उपचुनाव में चंद्रशेखर राव की बीआरआर को अवश्य सफलता मिल रही है, लेकिन भाजपा वहां मुख्य विपक्ष के रूप में उभर चुकी है। भाजपा अगले लोकसभा चुनाव में तेलांगना, बिहार, पश्चिम बंगाल, पंजाब आदि राज्यों पर ज्यादा फोकस कर रही है। ठाकुर राजा सिंह की गिरफ्तारी और केंद्रीय भाजपा के उस पर चुप्पी से कार्यकर्ताओं में थोड़ी निराशा अवश्य है किंतु चंद्रशेखर राव के विरुद्ध उनका असंतोष खत्म नहीं होगा। दूसरे, नीतीश अगर कांग्रेस को साथ लेकर चलना चाहते हैं तो चंद्रशेखर राव इसके विरुद्ध हैं। तीसरी ओर आम आदमी पार्टी की राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा बढी हैं और वह विपक्षी कावायदों से अपने को दूर रखता है। चंद्रशेखर राव द्वारा पंजाब और हरियाणा में अपनी पार्टी की ईकाई गठित करने के कारण भी आप का विरोध है। चन्द्रशेखर राव ने किसान आंदोलन के नेता गुरनाम सिंह चढुनी को हरियाणा किसान मंच का अध्यक्ष घोषित कर संदेश दिया कि वह बाहर के राज्यों में भी उन नेताओं को महत्व देने वाले हैं जो मोदी

ठाकुर राजा सिंह

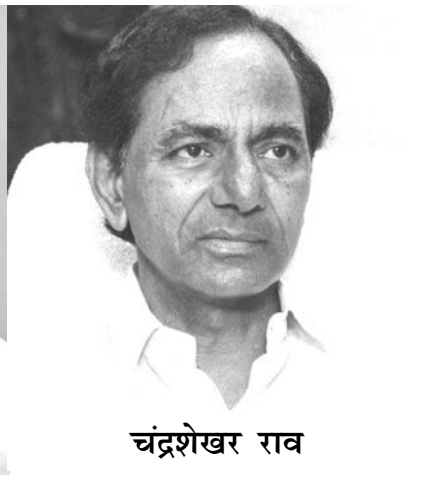
चंद्रशेखर राव

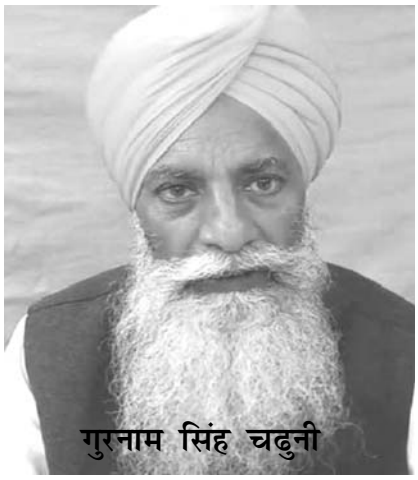
गुरनाम सिंह चढुनी

विरोधी अभियान में किसी न किसी तरह शामिल रहे हैं। किंतु अभी तक उनके ऑफर को स्वीकार करने वाला किसी पार्टी का कोई आसान नेता सामने नहीं आया, जिसका जनाधार हो। कांग्रेस इन मामलों पर अभी खामोश है तथा राहुल गांधी की भारत यात्रा पर फोकस कर रही है। उसे लगता है कि राहुल गांधी की छवि निखारने के बाद वे भाजपा और नरेंद्र मोदी विरोध के सबसे बड़े चेहरा होंगे। राहुल गांधी अपनी यात्रा में कह भी रहे हैं कि हम सीधे भाजपा और मोदी सरकार से लोहा ले रहे हैं। अभी तक तमिलनाडु में डीएमके तथा महाराष्ट्र में उनके साथी राकांपा और उद्धव के शिवसेना को छोड़कर किसी दल ने भारत जोड़ो यात्रा में सक्रिय सहभागिता नहीं दिखाई है। राकांपा और उद्धव शिवसेना ने भी अभी तक लोकसभा चुनाव की दृष्टि से किसी के नेतृत्व मोर्चे के संदर्भ में कोई बात नहीं की है। शरद पवार ने कुछ महीने पूर्व अवश्य कहा था कि वे किसी मोर्चे का नेता नहीं बनेंगे। ममता बनर्जी की स्वयं महत्वाकांक्षाएं हैं। हां, अब उनका पूर्व का आक्रामक तेवर गायब है। इसलिए उनकी भावी राजनीति का अनुमान लगाना थोड़ा कठिन हो गया है। इस तरह देखा जाए तो नीतीश कुमार और चंद्रशेखर राव की अनवरत कोशिशों के बांवजूद मोदी विरोधी विपक्षी एकता के राष्ट्रीय स्तर पर साकार प्रतिध्वनि हमें सुनाई नहीं पड़ रही।

बहरहाल, एक सौ आठ दिन, नौ राज्यों का भ्रमण और करीब 3 हजार किमी से ज्यादा की पैदल यात्रा। इतना समय और इतनी दूरी तय कर के राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा दिल्ली पहुंची। इन नौ राज्यों की यात्रा के दौरान राहुल गांधी की कई लुभावनी और मनमोहक तस्वीरें सामने आई, जिसमें वे किसी के साथ सेल्फी ले रहे हैं तो कहीं बच्चों को दुलार रहे हैं। पूरी यात्रा के दौरान राहुल का एक मानवीय पक्ष उभरकर सामने आया। इसमें कोई संशय नहीं कि तमाम राजनीतिक धूर्तता के बीच उनके पास एक

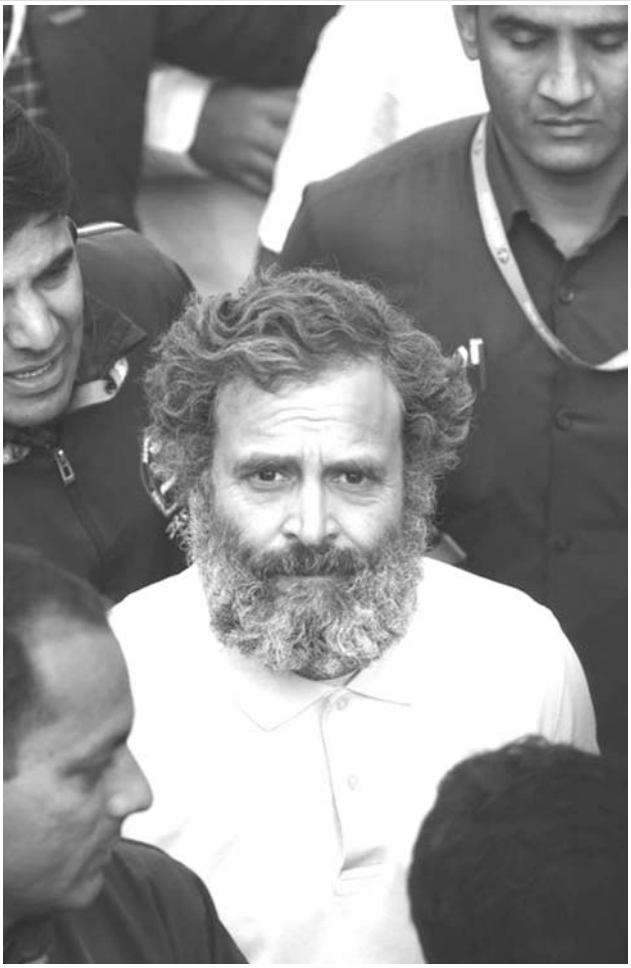

संवदेनात्मक एप्रोच है। कांग्रेस समर्थक तो उनमें एक नया नायक देखने लगे हैं। हालांकि भारतीय जनता जितनी जल्दी में अपना नायक गढ़ती है, उतनी ही तेजी से वो उसे ध्वस्त कर विदा भी कर देती है।

बहरहाल, पैदल यात्रा आदमी को योगी बना देती है, कई साधू- संत पैदल चलने को अपनी साधना का हिस्सा मानते हैं। यह शरीर और मन दोनों को बदल सकता है, पैदल चलना एक योग है। शायद महात्मा गांधी इस रहस्य को जानते होंगे, तभी अपने जीवन में ज्यादातर दूरी उन्होंने पैदल ही नापी। उम्मीद की जाना चाहिए कि राहुल गांधी के साथ भी ऐसे ही कुछ बदलाव देखने को मिले। पैदल चलते हुए पसीने में तरबतर राहुल ने कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष खड़गे को संबोधित करते हुए यह भी कहा है कि हमारे नेताओं को महीने में कम से कम एक दिन इन सड़कों पर चलना चाहिए, धक्के खाने चाहिए, गिरना चाहिए, घुटने छिलने चाहिए। एक आदमी को यह समझ में आ जाए कि धक्के खाकर, गिरकर और घुटने छिले बगैर कुछ नहीं मिलता, तो यह समझना चाहिए कि पैदलगीरी ने राहुल के व्यक्तित्व को कहीं न कहीं झकझोरा है। यात्रा के दिल्ली पहुंचते ही एक हैरान करने वाली खबर आई कि राहुल गांधी भाजपा के पूर्वज राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी के समाधि स्थल भी जाएंगे। यह सत्य है कि अटल बिहारी वाजपेयी देश के एक उदार नेता थे, लेकिन वे महात्मा गांधी की तरह उतनी बड़ी सर्वमान्य शख्सियत भी नहीं थे कि कांग्रेस के एक अग्रज नेता के रूप में राहुल गांधी भाजपा के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की समाधि पर माथा टेकने जाए। लेकिन फिर भी राहुल का यह फैसला कुछ चौंका देता है। क्या यह माना जाना चाहिए कि राहुल गांधी के राजनीतिक मायने बदल रहे हैं, वे कुछ कुछ समझने लगे हैं कि कैसे राजनीति करना है? क्या यह पैदलगीरी का चिंतन है? दूसरी तरफ इस यात्रा को बहुत मोटे-तौर पर देखें तो यह अब तक कुछ ही हद तक सफल नजर आती है, वो भी इस लिहाज से कि बिल्कुल सुप्त, उत्साहहीन और नैराश्य में डूबी कांग्रेस के शरीर में एक झुरझुरी की अनुभूति हुई है। उसके माथे पर पसीने की बूंदे चमक रही हैं। इस यात्रा को लोगों को प्यार मिला, राहुल को स्नेह मिला, लेकिन राजनीतिक रूप से मिलने वाले परिणाम अभी सामने नहीं आए हैं, ये परिणाम भविष्य में ही नजर आएंगे। जो भीड़ उनके साथ दिख रही है, वो उनके लिए राजनीतिक रूप से कितनी फायदेमंद होगी और वोट में कितना 'कन्वर्ट' होगी, यह वक्त ही बताएगा। सबसे बड़ा सवाल तो यह है कि इस यात्रा के बाद राहुल गांधी क्या करेंगे? क्या वे अपने वातानुकूलित घर में आराम करेंगे? या अब वे अपना असल काम शुरू करेंगे, जो वास्तव में यात्रा के बाद शुरू होना चाहिए। मसलन, संगठन और पार्टी के स्तर पर उन्हें सक्रिय होना। 2023 के चुनावों की रणनीति बनाना। टूटी हुई कांग्रेस को एकजुट करना। राज्यों की भीतरघात और आपसी अदावत को खोजकर उसे दूर करना। क्या यह सब राहुल गांधी ने सोच रखा है या वे सिर्फ यात्रा के बहाने अपने खोए हुए अस्तित्व को टटोलने की कोशिश कर रहे थे। क्या इस यात्रा का उनके पास कोई क्लियर कट दृष्टिकोण और उद्देश्य है कि वे भारत जोड़ो यात्रा से अपने राजनीतिक भविष्य और कांग्रेस के अस्तित्व को कहां और कैसे देखना चाहते हैं? हो सकता है इस यात्रा से राहुल के भीतर कोई बड़ा बदलाव हो जाए। लेकिन क्या वे अपनी राजनीति बदल पाएंगे। क्योंकि राहुल गांधी के पास न फुटबॉल खेलने का और न ही आर्मी में जाने का कोई विकल्प है। उनके सामने सिर्फ एक ही रास्ता है राजनीति।

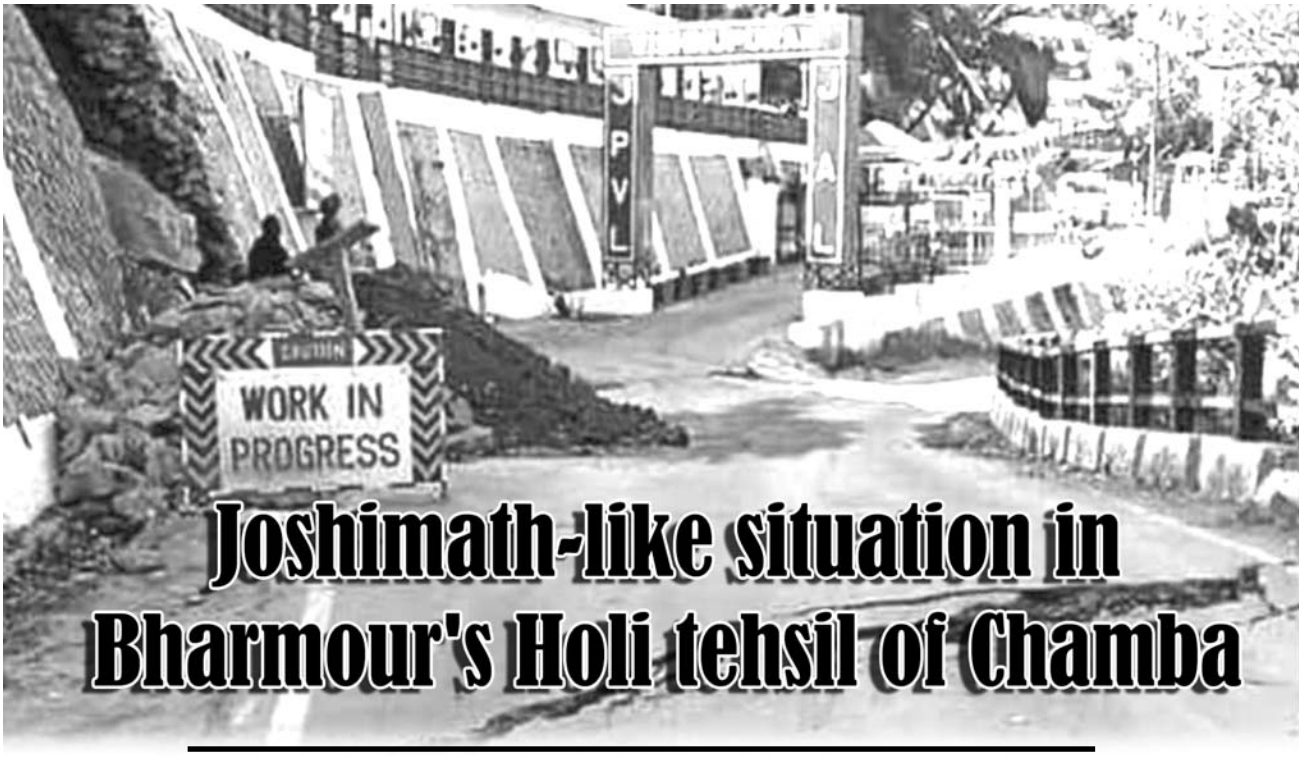

Joshimath-like situation in Bharmour's Holi tehsil of Chamba

The Joshimath-like situation is prevailing in Jhadonta village of Holi tehsil of Chamba district and the people of the village are highly upset and living in a fear of being uprooted. The condition of village Jhadonta in Holi tehsil of Bharmour in the Chamba district of Himachal Pradesh is similar to that of Joshimath. Even after a year has passed, no one is ready to heal the wounds of the villagers. Except for a few leaders and the local administration team, no one paid attention to the people of this village. The houses in the village had received cracks last year due to a tunnel of a local power project. Just as cracks in houses and land issues in Uttarakhand's Joshimath have made headlines in the national media, the situation is similar in Jhadaunta village as well. For some time, the land and houses in this village are continuously sinking. The village is having a population of more than 200 here, and people fear landslides and displacement. The power project here has also displaced people by giving compensation for some land and houses, but the problem is increasing day-by-day here. The villagers are blaming the tunnel of the project for landslides and land subsidence here, but unfortunately, no one listened. Notably, the Jhadaunta village is situated at the mouth of the 15-kilometer-long tunnel of the Holi-Bajoli 180 MW hydroelectric project. So far six houses have collapsed here and many are unsafe, so many people have

moved to temporary shelters. People's delegation has submitted a memorandum through Tehsildar demanding the government to conduct a geological survey here. Local authorities have visited the area several times but without any help to the villagers, lament the locals. The people here demand that the government should immediately conduct a survey from a geologist and tell the people whether this place is habitable or not. The Geological Survey of India has been written to assess the landslides happening here. SDM Bharmour Aseem Sood said appropriate action will be taken only after the report of the survey was received. However, for the time being, the company management has been told not to pour water into the tunnel.

दर्दनाक विमान हादसा
कोई भी जिंदा नहीं बचा

● अमित कुमार

15 जनवरी को नेपाल की एयरलाइंस का विमान यति क्रेश हो गया था। जिसमें 72 यात्री सवार थे। मारे गए यात्रियों में 5 लोग भारतीय बताए जा रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल ने पोखरा में हुए विमान हादसे के बाद मंत्रिपरिषद की एक आपात बैठक बुलाई। इसके साथ ही गृह मंत्रालय, सुरक्षा कर्मियों और सभी सरकारी एजेंसियों को तत्काल बचाव और राहत अभियान चलाने के निर्देश दिए। बता दें कि 15 जनवरी की रात दो इंजन वाला एटीआर 72 विमान नेपाल की राजधानी काठमांडू से पोखरा जाते समय हादसे का शिकार हो गया था। विमान हादसे में अब तक 69 लोगों के शव बरामद हो चुके हैं, जबकि 4 अभी भी लापता हैं। मारे गए लोगों में पांच भारतीय हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नेपाल विमान दुर्घटना के पीडित परिवारों के लिए दुख व्यक्त किया और प्रार्थना की। इस विमान हादसे की सबसे दुखद बात यह थी कि दो इंजन वाला टर्बोप्रॉप एटीआर 72 विमान लैंड होने से सिर्फ 10 से 15 सेकंड पहले ही हादसे का शिकार हो गया। एयरलाइंस के विमान का ब्लैक बॉक्स नेपाल सेना ने नागरिक उड्डयन प्राधिकरण के अधिकारियों को सौंप दिया जा चुका है। विमान हादसे में पांच मरने वाले भारतीय 4 लोग उत्तर प्रदेश और एक बिहार का रहने वाला था। इस बीच सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है। दावा किया जा रहा है कि दुर्घटनाग्रस्त होने वाले विमान में सवार एक भारतीय युवकों ने घटना से ठीक पहले फेसबुक पर खुद को लाइव किया था। जिससे विमान हादसा कैमरे में कैद हो गया।

विमान हादसे के बाद मौके पर मौजूद चश्मदीदों ने बाल-बाल बचने का दावा करते हुए कहा कि 5 भारतीय समेत 72 लोगों को ले जा रहा यति एयरलाइंस का विमान जब उनकी बस्ती के पास दुर्घटनाग्रस्त हुआ तब उन्होंने बम विस्फोट जैसी आवाज सुनी। उन्होंने बताया कि अगर विमान अगर बस्ती पर गिरता तो वह पूरी तबाह हो जाती। हिमालयी राष्ट्र में पिछले 30 से अधिक वर्षों में हुआ यह सबसे भयानक विमान हादसा है। विमान में सवार 72 लोगों में से कम से कम 69 लोगों की मौत हो गई। रिजॉर्ट शहर पोखरा में हाल ही में शुरू किए गए हवाई अड्डे पर विमान उतरते समय दुर्घटनाग्रस्त हो गया। नेपाली अखबार 'काठमांडू पोस्ट' से बातचीत के दौरान चश्मदीद कल्पना सुनार ने बताया कि वह अपने घर के आंगन में कपड़े धो रही थी। तभी उसने आसमान से एक विमान को गिरते हुए और उसकी ओर ही आते हुए देखा। उसने कहा कि विमान अजीब तरह से झुका था और कुछ पलों के बाद ही मैंने तेज धमाके की आवाज

सुनी, मानो बम फट गया हो। फिर मैंने सेती घाटी से काला धुआं निकलते देखा। विमान का एक पंख स्थानीय निवासी गीता सुनार के घर से करीब 12 मीटर दूर जमीन पर जा गिरा। बाल-बाल बची गीता ने कहा कि अगर विमान उसके घर के थोड़ा भी करीब गिरता तो पूरी बस्ती तबाह हो जाती। गीता ने बताया कि जहां विमान दुर्घटनाग्रस्त हुआ, वहां बहुत नुकसान हुआ है। उन्होंने कहा कि बस्ती इसलिए बच गई, क्योंकि विमान कुछ दूर गिरा, वरना हताहतों की संख्या और होती। गीता के अनुसार सेती घाटी के दोनों तरफ आग लगी थी और लाशें इधर-उधर बिखरी पड़ी थीं। घटना के समय वहां मौजूद बच्चों ने बताया कि आसमान से तेजी से गोल घूमते हुए गिर रहे विमान से यात्रियों की चीखें सुनाई पड़ रही थीं। 11 साल के समीर और प्रज्ज्वल पेरियार ने शुरू में सोचा कि विमान एक खिलौना है, लेकिन जब विमान करीब आया तो वे भागे। समीर ने बताया कि अचानक धुएं के कारण चारों ओर अंधेरा हो गया। ऐसा लग रहा था कि विमान के नीचे आते ही इसका पहिया हमें छू जाएगा। एक अन्य चश्मदीद बैंशा बहादुर बीके ने कहा कि यदि विमान सीधा गिरता तो वह बस्ती में गिरता और तब और अधिक नुकसान होता। अखबार में उन्हें उद्धृत करते हुए बताया गया है कि विमान की 7-8 खिड़कियां सही-सलामत थीं जिससे हमें लगा कि यात्री अभी भी जीवित हो सकते हैं। लेकिन देखते ही देखते आग फैल गई और वह बहुत भयावह था। नेपाल के नागर विमानन प्राधिकरण (सीएएएन) के अनुसार यति एयरलाइंस के 9एन-एएनसी एटीआर-72 विमान ने पूर्वाह्न 10 बजकर 33 मिनट पर काठमांडू के त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ान भरी थी। पोखरा हवाई अड्डे पर उतरते वक्त विमान पुराने हवाई अड्डे और नए हवाई अड्डे के बीच सेती नदी के तट पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में कुल 68 यात्री और चालक दल के 4 सदस्य सवार थे। विमान में 15 विदेशी नागरिक सवार थे, जिनमें 5 भारतीय, 4 रूसी, 2 कोरियाई के अलावा ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, अर्जेंटीना, इसराइल का 1-1 नागरिक था। दुर्घटनाग्रस्त हुए विमान में सवार 4 लापता लोगों की तलाश का काम अगले दिन सुबह फिर शुरू किया गया। इससे पहले बचाव अभियान को 15 जनवरी रात रोक दिया गया था। प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल 'प्रचंड' ने विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने के बाद सुरक्षाकर्मियों और सभी सरकारी एजेंसियों को प्रभावी बचाव अभियान चलाने का निर्देश दिया। प्रधानमंत्री ने विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने के तुरंत बाद मंत्रिमंडल की आपात बैठक बुलाई थी।

गौरतलब हो कि इस विमान में को-पायलट रहीं अंजू की कहानी और भी ज्यादा दर्दनाक है। इस हादसे में सबसे दुखद पहलू यह है कि इसमें इसकी को-पायलेट अंजू खतीवड़ा की भी मौत हो गई। इस विमान की उड़ान के बाद उन्हें कैप्टन का प्रमाण पत्र दिया जाना था। लेकिन इसके ठीक पहले इस हादसे में को-पायलट अंजू की मौत हो गई। अंजू खतीवड़ा की इस हादसे में मौत के बाद नेपाल में शोक की लहर छा गई है। दरअसल, अंजू के पति भी विमान के पायलट थे और

नेपाल में 12 साल में आठ बड़े हादसे, 166 से अधिक लोगों की जा चुकी है जान

नेपाल में बीते 12 साल में आठ बड़े विमान हादसे हो चुके हैं। 2010 से लेकर अब तक यहां अब तक 166 से अधिक लोगों की मौत हो चुकी है। दरअसल, यहां खराब मौसम और पहाड़ों के बीच बनीं कठिन हवाई पट्टी इन हादसों का बड़ा कारण बनती हैं। आइए जानते हैं नेपाल में हुए बड़े विमान हादसों के बारे में :-

☞ **29 मई 2022 को तारा एयरलाइन का विमान हुआ था क्रैश :-** इस दुर्घटना में चार भारतीयों समेत सभी 22 लोगों की मौत हो गई थी। पोखरा से जोमसोम के लिए उड़ान भरने वाले तारा एयरलाइंस के विमान 9 NAET का संपर्क टूट गया था। इस विमान ने सुबह 9.55 बजे उड़ान भरी थी। लेकिन छह घंटे बाद इसका सुराग पता चला था

☞ **2018 यूएस-बांग्ला एयरलाइंस फ्लाइट 211 क्रैश :-** यह विमान हादसा 2018 में हुआ था। विमान ढाका से काठमांडू जा रहा था। नेपाल के त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतरते समय यह दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस हादसे में 51 लोगों की मौत हो गई थी। विमान में 71 लोग सवार थे।

☞ **2016 तारा एयर फ्लाइट 193 क्रैश :-** 24 फरवरी 2016 को यह विमान हादसा हुआ था। विमान पोखरा से जोमसोम के लिए उड़ान जा रहा था। टेकऑफ के आठ मिनट बाद विमान लापता हो गया था। इसके बाद विमान का इसका मलबा दाना गांव के पास पाया गया। विमान में 23 लोग सवार थे। कोई नहीं बचा।

☞ **2012 सीता एयर फ्लाइट 601 क्रैश :-** 2012 में हुए इस विमान हादसे में 19 लोगों की मौत हो गई थी। विमान ने काठमांडू से उड़ान भरी थी, लेकिन तकनीकी समस्या के कारण इसकी आपाकालीन लैंडिंग कराई गई। इसी दौरान हादसा हो गया और सभी की मौत हो गई।

☞ **2012 अग्नि एयर डोर्नियर 228 क्रैश :-** अग्नि एयर का डोर्नियर 228 विमान ने पोखरा से जोमसोम के लिए उड़ान भरी थी। जोमसोम हवाई अड्डे के पास पहुंचते ही विमान दुर्घटना का शिकार हो गया था। इसमें 21 लोग सवार थे। हादसे में पायलटों समेत 15 यात्रियों की मौत हो गई थी।

☞ **2011 बुद्ध एयर फ्लाइट 103 क्रैश :-** 25 सितंबर 2011 को बुद्ध एयर का विमान हादसे का शिकार हो गया था। जहाज पर सवार सभी 22 लोग, जिनमें 10 भारतीय नागरिक भी शामिल थे, मारे गए।

☞ **2010 तारा एयर ट्विन ओटर क्रैश :-** 15 दिसंबर 2010 को तारा एयर विमान क्रैश हो गया था। टेक-ऑफ के तुरंत बाद विमान दुर्घटना का शिकार हो गया। चालक दल के तीन सदस्यों सहित जहाज पर सवार सभी 22 लोग मारे गए।

☞ **2010 अग्नि एयर फ्लाइट 101 क्रैश :-** अग्नि एयर फ्लाइट 101 के विमान का संपर्क टूट गया था। यह विमान काठमांडू से उड़ा था। उड़ान भरने के 22 मिनट बाद विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इसमें सवार सभी 14 लोगों की मौत हो गई।

साल 2006 में एक विमान हादसे में उनकी भी मौत हो गई थी। अपने पति की मौत के बाद अंजू ने अमेरिका में पायलट की शिक्षा और ट्रेनिंग ली थी। उन्होंने कक्षा 12वीं तक भारत में ही पढाई की थी। जानकारी के मुताबिक हादसे का शिकार हुए विमान को पायलट कमल केसी उड़ा रहे थे। जबकि अंजू विमान की को-पायलट थीं। अंजू को करीब 100 घंटे विमान उड़ान का अनुभव था। इसके बाद उन्हें पायलट का प्रमाण पत्र दिया जाना था। लेकिन वक्त तो शायद ये मंजूर

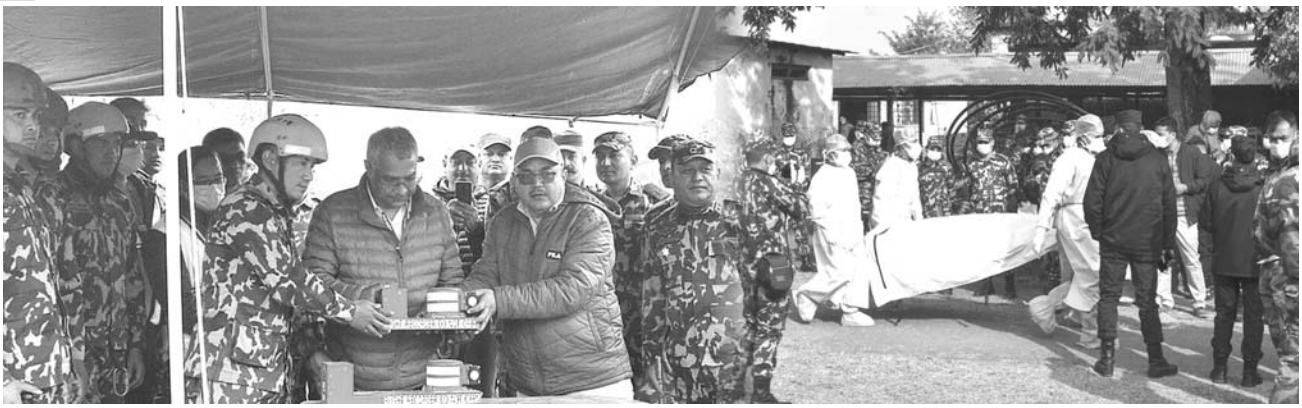

नहीं था और इसके पहले ही हादसा हो गया, जिसमें अंजू खतीवड़ा की मौत हो गई। उनकी मौत की खबर के बाद पूरे नेपाल में शोक की लहर है। उनकी कहानी सोशल मीडिया में वायरल हो रही है।

सनद् रहे कि नेपाल की यति एयरलाइन के पहले व्यावसायिक विमान ने 2 दशक से अधिक समय पहले आसमान में पहली उड़ान भरी थी। मौजूदा समय में इस कंपनी के हवाई बेड़े में 6 एटीआर विमान शामिल हैं। नेपाल के अलग-अलग क्षेत्रों को जोड़ने वाली यति एयरलाइन सिर्फ 'एटीआर 72-500 एस' विमानों का संचालन करती है। कंपनी की वेबसाइट पर दी गई जानकारी के मुताबिक, दो 'प्रैट एंड व्हिटनी पीडब्ल्यू127' इंजन वाले प्रत्येक 'एटीआर 72-500 एस' विमान में 70 यात्रियों के बैठने की व्यवस्था है। कंपनी ने सितंबर 1998 में कनाडा में निर्मित एक 'डीएचसी 6-300' ट्विन ऑटर विमान के जरिए व्यावसायिक उड़ानों की दुनिया में कदम रखा था। यति एयरलाइन की वेबसाइट पर लिखा है, दो दशक से अधिक समय से नेपाल में विमान सेवा उपलब्ध करा रहे हैं। हम नेपाल के प्रमुख शहरों के बीच 'एटीआर 72-500 एस' विमान का संचालन करते हैं। उड़ानों पर नजर रखने वाली वेबसाइट 'फ्लाइटरडार24' ने बताया कि नेपाल में 15 जनवरी को दुर्घटनाग्रस्त हुआ विमान यति एयरलाइन 15 साल पुराना 'एटीआर 72-500 एस' विमान था, जिसकी पंजीकरण संख्या 9एन-एएनसी और क्रमांक संख्या 754 थी। वेबसाइट के मुताबिक, यह विमान पुराने ट्रांसपोंडर से लैस था, जिसका डेटा विश्वसनीय नहीं है। हम उच्च रेजोल्यूशन वाला डेटा डाउनलोड कर रहे हैं और इसकी गुणवत्ता की जांच कर रहे हैं। यति एयरलाइन की वेबसाइट के अनुसार, 'शॉर्ट टेक ऑफ एंड लैंडिंग (एसटीओएल) ऑपरेशन' (छोटी दूरी की उड़ान सेवा) के लिए 2009 में उसकी सहायक कंपनी तारा एयर स्थापित की गई थी, जिसके बेड़े में डीएचसी 6-300 और डॉनियर डीओ 228 विमान शामिल हैं। वेबसाइट के मुताबिक, दोनों विमानन कंपनियां मिलकर पूरे नेपाल में उड़ानों का सबसे बड़ा नेटवर्क उपलब्ध कराती हैं। वेबसाइट के होम पेज पर जाने पर एक शोक संदेश सामने आता है, जिसमें हादसे में लोगों की मौत पर दुख जताया गया है। संदेश में कहा गया है, यति एयरलाइन के 9एन एएनसी एटीआर72 500 विमान हादसे में जान गंवाने वाले यात्रियों के शोक में हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि 16 जनवरी 2023 के लिए यति एयरलाइंस की सभी नियमित उड़ानें रद्द कर दी गई हैं। हालांकि आपातकालीन और बचाव उड़ानें जारी रहेंगी। असुविधा के लिए खेद है।

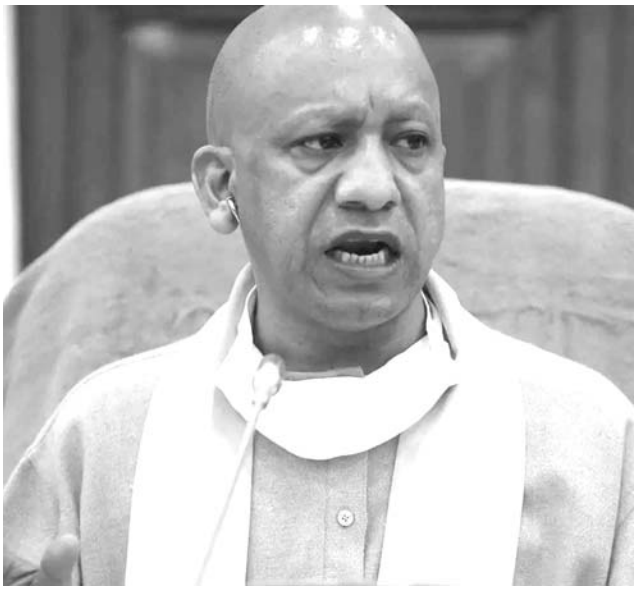

बहरहाल, उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नेपाल विमान हादसे का शिकार हुए उत्तरप्रदेश के मृतक युवकों के परिवार को आर्थिक सहायता देने की घोषणा की है और साथ ही साथ हरसंभव मदद करने की बात भी कही है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने नेपाल विमान हादसे का शिकार हुए गाजीपुर के रहने वाले मृतकों के परिवार को 5 लाख की आर्थिक मदद की घोषणा की है। इस प्लेन हादसे में उत्तरप्रदेश के गाजीपुर के 4 युवकों की जान चली गई। इन 4 युवकों का शव लेने के लिए परिजन नेपाल की राजधानी काठमांडू पहुंचे। शवों की डीएनए टेस्टिंग काठमांडू में होनी है। परिवार के लोगों के साथ एक रिटायर्ड कानूनगो भी मौके पर गए हुए हैं। योगी ने मृतकों के पार्थिव शव को लाने में होने वाले खर्चे को भी राज्य सरकार द्वारा वहन किए जाने के निर्देश दिए हैं।

उपराज्यपाल के खिलाफ सड़क पर दिल्ली सरकार

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने आरोप लगाया कि उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना सामंती मानसिकता से पीड़ित हैं और शहर में गरीब बच्चों के लिए अच्छी शिक्षा नहीं चाहते। सरकारी कामकाज में उपराज्यपाल के कथित हस्तक्षेप पर दिल्ली विधानसभा को संबोधित करते हुए केजरीवाल ने कहा कि मेरे शिक्षकों ने भी कभी इस तरह मेरा होम वर्क नहीं जांचा, जैसे उपराज्यपाल फाइलें खंगालते हैं। उन्होंने कहा कि उपराज्यपाल मेरे हेडमास्टर नहीं हैं। लोगों ने मुझे मुख्यमंत्री बनाया है। केजरीवाल ने दावा किया कि एक बैठक में उपराज्यपाल ने उनसे कहा था कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) उनकी वजह से दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) चुनाव में 104 सीटें जीतीं हैं। मुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि उपराज्यपाल सामंती मानसिकता से ग्रस्त हैं और नहीं चाहते कि दिल्ली के गरीब बच्चे अच्छी शिक्षा हासिल करें। उन्होंने कहा कि उपराज्यपाल कौन हैं? वे कहां से आए हैं? वे हमारे सिर पर बैठे हैं। क्या अब वो इस बात का फैसला करेंगे कि हम अपने बच्चों को पढ़ने कहां भेजें? हमारा देश ऐसी सामंती मानसिकता वाले लोगों के कारण ही पिछड़ रहा है। केजरीवाल ने कहा कि जीवन में कुछ भी स्थायी नहीं है। हम भी कल केंद्र में सत्ता में आ सकते हैं, हमारे भी उपराज्यपाल होंगे। हमारी सरकार जनता को परेशान नहीं करेगी। उन्होंने कहा कि उपराज्यपाल के पास खुद फैसले करने का अधिकार नहीं है। केजरीवाल ने कहा कि उच्चतम न्यायालय ने स्पष्ट रूप से कहा था कि वे पुलिस, जमीन और सार्वजनिक व्यवस्था के अलावा अन्य मुद्दों पर फैसला नहीं कर सकते। मुख्यमंत्री ने भाजपा के सांसदों, विधायकों और मंत्रियों के विदेश में पढ़ाई कर रहे बच्चों की एक सूची भी सदन में पेश की और कहा कि हर किसी की अच्छी शिक्षा तक पहुंच होनी चाहिए।

दिल्ली के उपराज्यपाल वी.के. सक्सेना और आम आदमी पार्टी सरकार के बीच जारी खींचतान के बीच मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल ने विधानसभा में कहा कि समय बड़ा बलवान होता है, दुनिया में कुछ भी स्थायी नहीं होता। कोई यह सोचे कि मेरी सरकार बन गई है तो हमेशा मेरी ही होगी। जो आज है हो सकता है, कल न रहे। आज आपका एलजी है, हो सकता है कल एलजी हमारे हों। दरअसल, उपराज्यपाल सक्सेना द्वारा फाइलों को अटकाने के मुद्दे पर अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुए मुख्यमंत्री केजरीवाल ने सदन में कहा कि दुनिया में कुछ भी परमानेंट नहीं होता। कोई यह सोचे कि मेरी सरकार बन गई है और अब यह हमेशा रहेगी। केन्द्र में उनकी सरकार है, उनका एलजी है। आज उनकी सरकार है। कल है, परसों है, लेकिन अगले दिन यानी कभी न कभी तो बदलेगी। केजरीवाल ने कहा कि भगवान ने चाहा तो हो सकता है आने वाले समय में केन्द्र में हमारी सरकार हो, हमारे एलजी

हों और दिल्ली में हो सकता है हमारी, भाजपा की, कांग्रेस की या किसी अन्य दल की सरकार हो। तब हमारा एलजी ऐसा नहीं करेगा। हम जनतंत्र की इज्जत करते हैं, हम संविधान की इज्जत करते हैं। उन्होंने कहा कि मैं दिल्ली के सभी बच्चों को अपने बच्चों-पीयूष और हर्षिता जैसा ही समझता हूं। मैं चाहता हूं सभी बच्चों को अच्छी शिक्षा मिले। हमने इसके लिए दिल्ली में शानदार स्कूल बनाए हैं। स्कूलों के नतीजे भी अच्छे आ रहे हैं। लोग प्राइवेट स्कूलों से बच्चों को निकालकर सरकारी स्कूलों में भर्ती करा रहे हैं। अच्छे नतीजों के लिए टीचर्स और प्रिंसिपल्स का योगदान सबसे ज्यादा है। हम चाहते हैं कि दिल्ली के टीचर्स को अच्छी से अच्छी ट्रेनिंग मिले। इसके लिए हमने उन्हें अलग-अलग विश्वविद्यालयों के साथ ही विदेशों में भी ट्रेनिंग के लिए भेजा था। केजरीवाल ने कहा कि हम अभी दिल्ली के टीचर्स को ट्रेनिंग के लिए फिनलैंड भेजना चाहते थे, लेकिन एलजी ने एक बार नहीं दो बार फाइल को अटकाया। अजीब जनतंत्र है हमारा। जब मुख्यमंत्री और शिक्षामंत्री ने कह दिया तो बात फाइनल होनी चाहिए, लेकिन फाइलें जब एलजी साहब के पास जाती हैं तो उन्हें अटका दिया जाता है।

गौरतलब हो कि दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल को मुलाकात के लिए उचित समय देने से इनकार कर दिया। यह घटनाक्रम ऐसे वक्त हुआ है जब शासन के मुद्दे पर आम आदमी पार्टी (आप) की सरकार और उपराज्यपाल के बीच पहले से ही टकराव की स्थिति है। दिल्ली सरकार के सूत्रों के दावों पर उपराज्यपाल के दफ्तर की ओर से तुरंत कोई प्रतिक्रिया उपलब्ध नहीं हुई। उपराज्यपाल ने केजरीवाल को पत्र लिखकर उन्हें शासन से संबंधित मुद्दों पर चर्चा के लिए आमंत्रित किया था। केजरीवाल ने सक्सेना को लिखे खत में निमंत्रण को स्वीकार कर लिया था और कहा था कि मैं आपके दफ्तर से उपयुक्त समय तय करूंगा। उपराज्यपाल ने मुख्यमंत्री को शासन की शक्तियों को लेकर मौजूदा टकराव पर चर्चा करने के लिए आमंत्रित किया था। मगर एलजी के दफ्तर ने मुख्यमंत्री को उचित समय देने से इनकार करते हुए कहा कि उपराज्यपाल बहुत व्यस्त हैं, मिल नहीं सकते। केजरीवाल ने दिल्ली नगर निगम में पीठासीन अधिकारी और 'एल्डरमैन' (मनोनीत पार्षदों) एवं हज कमेटी के सदस्यों की उनके द्वारा की गई नियुक्ति पर उनसे सवाल किया था और कहा था कि दिल्ली के प्रशासक के तौर पर उनकी भूमिका का मतलब क्या चुनी हुई सरकार को दरकिनार करना है?

बहरहाल, दिल्ली सरकार के कामकाज में उपराज्यपाल वी. के. सक्सेना के कथित हस्तक्षेप के खिलाफ मुख्यमंत्री अरविन्द केजरीवाल समेत आप के सभी मंत्री और विधायक और कार्यकर्ता सड़क पर उतर आए। आप का आरोप है कि दिल्ली में शिक्षा क्रांति को रोकने के लिए भाजपा और उपराज्यपाल साजिश कर रहे हैं। इसी के चलते दिल्ली विधानसभा की कार्यवाही को भी दिन भर के लिए स्थगित कर दिया गया। प्रदर्शन के दौरान मुख्यमंत्री केजरीवाल ने कहा कि कोई उपराज्यपाल कहे कि वह सुप्रीम कोर्ट को नहीं मानता तो जनतंत्र नहीं बचेगा। हम 'टीचर्स को ट्रेनिंग के लिए फिनलैंड जाने दो' के लिए एलजी हाउस मार्च कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि एलजी ने मोहल्ला क्लीनिक के डॉक्टर, मार्शलों की सैलरी रोक दी। उन्होंने कहा कि मेरी एलजी से अपील है कि वे संविधान को मानें, सुप्रीम कोर्ट की राय मानें। एलजी एक सलाहकार रखें, जो सुप्रीम कोर्ट और संविधान की समझ रखता हो। वहीं, दिल्ली के डिप्टी सीएम मनीष सिसोदिया ने कहा कि लोगों द्वारा चुनी हुई दिल्ली सरकार शिक्षकों की फिनलैंड में ट्रेनिंग करवाना चाहती है तो एलजी को क्या दिक्कत है? क्यों वे बच्चों की अच्छी शिक्षा के खिलाफ हैं? एलजी के पास इसे रोकने का कोई अधिकार नहीं है। सुप्रीम कोर्ट की संवैधानिक पीठ ने इसकी साफ-साफ व्याख्या की है।

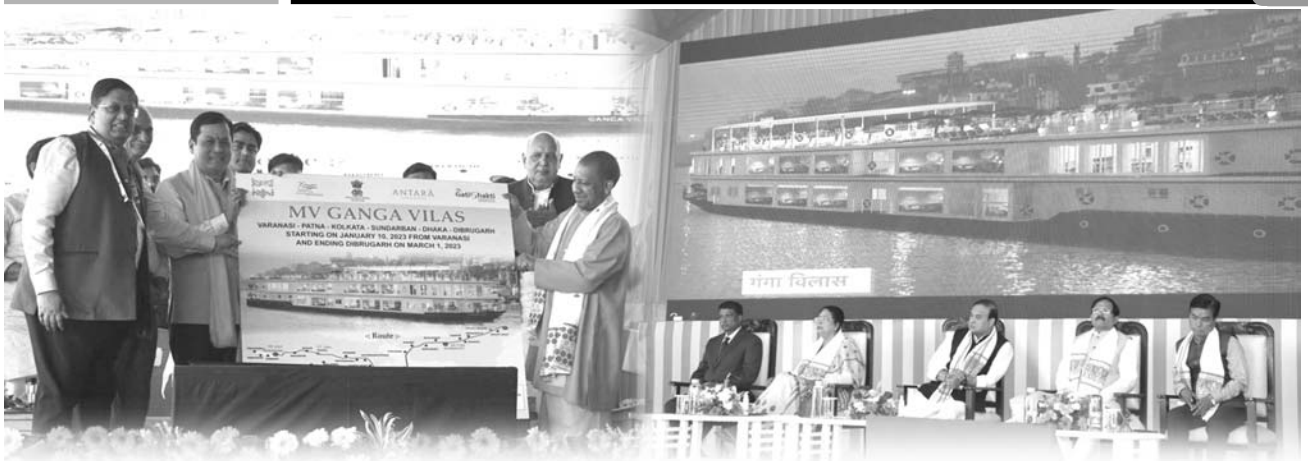

PM Modi launch world's longest river cruise

Prime Minister Narendra Modi launch the world's longest river cruise on January 13 in Varanasi, which the Union Minister of Ports, Shipping and Waterways, Sarbananda Sonowal said will herald a new age of river cruise tourism for India. The luxury cruise will cover a distance of more than 3,200 km across 27 river systems in five states in India and Bangladesh. The huge untapped potential of river cruises is set to get unlocked with the launch of this service, added Sonowal. Speaking to reporters here, Sonowal said, "Under the dynamic leadership of Prime Minister Narendra Modi, we are exploring the immense wealth that our rich river system has to offer". Sonowal said, "This avenue of sustainable development via inland waterways has received a tremendous boost as efforts to augment cargo traffic as well as passenger tourism have borne fruit with encouraging results. The MV Ganga Vilas cruise is a step towards unlocking the huge potential river tourism the country has to offer". "Our rich heritage will get further transcended on the global stage as tourists will be able to experience the spiritual, the educational, the well-being, the cultural as well as the richness of the biodiversity of India," he added. The MV Ganga Vilas cruise is curated to bring out the best of the country to be showcased to the world. The 51 days cruise is planned with visits to 50 tourist spots including World Heritage Sites, national parks, river ghats, and major cities like Patna in Bihar, Sahibganj in Jharkhand, Kolkata in West Bengal, Dhaka in Bangladesh, and Guwahati in Assam. The MV Ganga Vilas vessel is 62 metres in length and 12 meters in width and comfortably sails with a draft of 1.4 meters. It has three decks, and 18 suites on board with a capacity of 36 tourists, with all the amenities to provide a memorable and luxurious experience for the tourists. The maiden voyage of MV Ganga Vilas will witness 32 tourists from Switzerland relishing the Varanasi to Dibrugarh journey. The expected date of arrival of MV Ganga Vilas in Dibrugarh is on March 1, 2023. Highlighting the need to develop river cruise tourism in the country, Union Minister Sonowal said that the development of this sector would generate employment opportunities in the hinterland. The government is making capital expenditures to build capacity for the success of river cruise tourism in the country. The MV Ganga Vilas cruise is a first-of-its-kind cruise service. With support from the Inland Waterways Authority of India (IWAI) under the Ministry of Shipping, Ports, and Waterways (MoPSW), the success of this service is likely to enthuse entrepreneurs to explore river cruises in other parts of the country. Sonowal added that the construction of 10 passenger terminals across NW2 is going on which will further bolster the prospect of a river cruise.

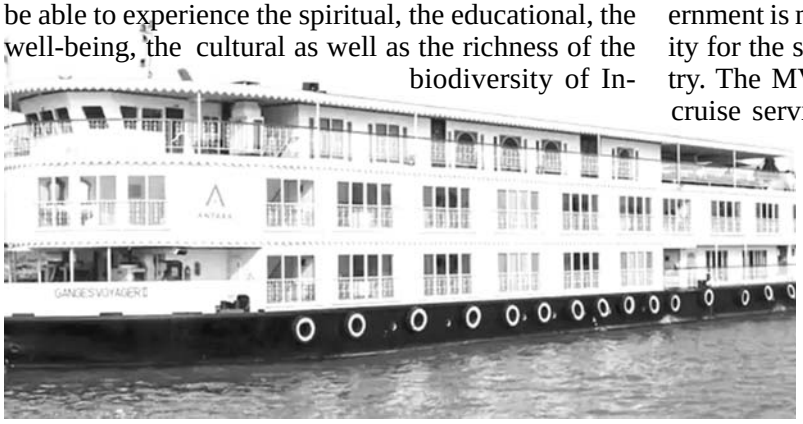

बेटियों ने कहा, पांव भी काम आ जाएं तो ले लें

सात मरीजों को दी गई नई जिंदगी

● नवीन रांगियाल

किसी के घर में मौत हो जाए और लोग मृतक के परिवार के सदस्यों को बधाई देने लगे तो कल्पना नहीं की जा सकती कि उस परिवार के सदस्यों पर क्या गुजरती होगी। लेकिन इंदौर के खजांची परिवार के साथ ऐसा ही हुआ है। एक तरफ वे अपने घर के सदस्य के निधन पर गमगीन थे, तो दूसरी तरफ उन्हें इस बात की बधाई मिल रही थी कि घरवालों ने मृतक के शरीर के अंगों को दान कर परोपकार का काम किया। इस गमगीन वक्त में भी मृतक के अंगों को डोनेट करने का फैसले के लिए न सिर्फ एक जज्बे की जरूरत होती है, बल्कि इसके लिए बहुत बड़ा जिगर भी चाहिए होता है। इंदौर ने यही कर दिखाया है। स्वच्छता में आधा दर्जन बार पूरे देश में अपना डंका बजा चुका इंदौर अब अंगदान यानी ऑर्गन डोनेशन में भी मिसाल कायम कर रहा है। अंगदान करने के एक उदाहरण ने न सिर्फ इंदौर की मानवीयता का स्तर ऊंचा उठा दिया, बल्कि इस शहर की शान में चार चांद लगा दिए। 22 साल पहले एक नौजवान की मौत के बाद इंदौर में अंगदान की शुरुआत हुई थी, आज 2023 में देश का सबसे स्वच्छ शहर अंगदान में भी सिरमौर बनने की ओर बढ़ रहा है। अंगदान की एक ताजा मिसाल की वजह से इंदौर एक बार फिर से देशभर में सुर्खियां बंटोर रहा है। दुनिया को

श्रीमती विनीता सुनील खजांची

अलविदा कह चुकी इंदौर की एक महिला विनीता खजांची अपने शरीर के तकरीबन हर अंग को दान कर के देश के अलग-अलग हिस्सों में रह रहे 7 मरीजों को जिंदगी दे गई। मौत के दुख में आकंठ डूबे परिवार ने एक फैसला लिया। जो समाज को महादान की सीख देने के साथ ही दूसरों को जिंदगी देने वाला साबित हुआ। विनीता लिवर, फेफड़े, किडनी, आंखें और त्वचा डोनेट करने में तो इंदौर का इतिहास रहा ही है, लेकिन विनीता खजांची के हाथ भी ट्रांसप्लांट के लिए भेज दिए गए। यही नहीं, उनकी बेटियों ने तो डॉक्टरों को यहां तक कह डाला कि अगर मां के पैर किसी के काम आ रहे हैं तो वे भी ले लीजिए। सुनकर गौरव महसूस होता है कि अब तक 47 बार देश के अलग-अलग शहरों में इंदौर से अंग भेजे जा चुके हैं। बता दें कि हाल ही में लालू प्रसाद यादव की बेटी रोहिणी आचार्य ने अपने पिता को किडनी देकर वो काम किया था, जिसे करने पर शायद बेटे को भी सोचना पड़ता।

☞ **कौन थीं विनीता खजांची? :-** विनीता खजांची इंदौर के रतलाम कोठी क्षेत्र में रहने वाली ट्रांसपोर्ट व्यवसायी सुनील खजांची की पत्नी थीं। वे 52 साल की थीं। और उन्हें ब्रेन की बीमारी थी। इसी तकलीफ की वजह से उन्हें 13 जनवरी को शहर के बॉम्बे हॉस्पिटल में एडमिट किया गया था। डाक्टरों ने ब्रेन डेथ की बात कही थी। इसके बाद परिजनों ने अंग दान करने का फैसला लिया और डाक्टरों ने ग्रीन कॉरिडोर तैयार किया।

☞ **कहां-कहां भिजवाए अंग? :-** ग्रीन कॉरिडोर बनाकर विनीता के लंग्स अपोलो हॉस्पिटल चेन्नई, उनके हाथ ग्लोबल हॉस्पिटल मुंबई, लीवर इंदौर के चोइथराम हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर, एक किडनी बॉम्बे हॉस्पिटल और दूसरी किडनी सीएचएल हॉस्पिटल में एक मरीज के लिए भिजवाई गई। जहां जरुरतमंद मरीजों को यह सभी अंग प्रत्यारोपित किए गए। मध्यप्रदेश में यह पहला मामला है जब हाथ भी डोनेट किया गया, विनिता के ये हाथ मुबंई में एक लड़की को प्रत्यारोपित किए जाएंगे। हाथों को भेजने के लिए चैन्नई से चार्टर प्लेन इंदौर आया था। इसके पहले भी इंदौर से कई बार देश के दूसरे शहरों में अंग भिजवाए जा चुके हैं।

☞ **आहना और निरिहा ने कायम की मिसाल :-** क्रिश्चन समुदाय में ऐसा अंधविश्वास है कि अगर मरने के बाद अंग दान कर दिए गए तो अगले जन्म में उसे बगैर उस अंग के पैदा होना पड़ेगा, जिस अंग को दान किया गया। वहीं, हिन्दुओं में किसी की मौत होने पर यह ख्याल रखा जाता है कि जब तक अंतिम संस्कार न कर दिया जाए, तब तक मृतक की डेडबॉडी को कोई नुकसान न पहुंचे, लेकिन विनीता की दो बेटियों निरिहा और आहना ने अपनी मां के पूरे शरीर के अंग डोनेट कर के मिसाल पेश की है। यह मिसाल ऑर्गन डोनेट की जागरूकता को लेकर एक बड़ी क्रांति साबित होगी।

☞ **गमगीन वक्त में अंगदान का फैसला :-** विनीता खजांची के बेटे आधार खजांची और उनकी दो बेटियों निरिहा वैद और अहाना खजांची ने बताया कि कुछ समय पहले ही उन्होंने अपने दादाजी और घर के दूसरे सदस्यों के निधन के बाद उनके अंगदान किए थे। उनकी आंखें और स्कीन दान की गई थी। उन्होंने बताया कि यह तो सवाल ही नहीं था कि अंगदान करना है या नहीं। सवाल तो यह था कि हम कैसे ज्यादा से ज्यादा अंगों को लोगों की जरूरत के लिए दान कर सके। दादाजी को हार्ट अटैक आया था। ऐसे में उनकी सिर्फ आंखें और त्वचा ही दान कर सके। लेकिन मां के समय हम ज्यादा अंग दान कर सके, यह अच्छी बात है। हमने तो पैरों को दान करने की भी बात कही थी, लेकिन इसके लिए कोई तकनीक नहीं होने की वजह से ऐसा नहीं कर सके। उन्होंने बताया कि हमे तो खुशी है कि हमारी मां की आंखों और हाथों की उम्र बढ गई। मां नहीं रहीं, लेकिन उनके अंग अभी भी जिंदा हैं। इस महादान के लिए अहाना यूएस से आई जो टिकटॉक कंपनी में काम करती हैं और निरिहा दुबई से आई जो दुबई फ्लाई में काम करती हैं। अहाना और निरिहा के भाई आधार भोपाल में प्रोक्टर एंड गैंबल कंपनी में मैनेजर हैं।

☞ **इंदौर में 22 साल पहले अंगदान का 'श्रीगणेश' :-** इंदौर

शहर में अंगदान महादान की शुरुआत 22 वर्ष पहले हुई थी। 24 अप्रैल 2000 को विजय नगर निवासी बैंक अधिकारी पिता दिलीप मेहता के 14 वर्षीय बेटे मयंक की एक हादसे में मौत हो गई थी। मयंक परिवार के साथ कार से नागदा जा रहा था। हादसे में मयंक को सिर में गंभीर चोट आई थी, जिसके बाद डॉक्टरों ने उसे ब्रेनडेड घोषित कर दिया था। बेटे की मौत से टूट चुके परिवार ने मयंक के अंग दान करने का फैसला लिया और उसी फैसले के साथ इंदौर में अंगदान का श्रीगणेश हुआ।

डॉ० संगीता पाटिल

☞ **'महादान' में इंदौर का 'योगदान' :-**इंदौर में 4 साल में 47वां ग्रीन कॉरिडोर बना, प्रदेश में पहली बार हाथ हुए ट्रांसप्लांट, इंदौर से 47 बार देश के अलग-अलग शहरों में अंग भेजे, 2016 से अब तक 1022 अंगदान हो चुके।

☞ **क्या होती है प्रक्रिया, कैसे काम करता 'सोटो'? :-** महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज के डीन और मध्यप्रदेश में सोटो के (नेशनल ऑर्गन टीशू एंड ट्रांसप्लांट ऑर्गनाइजेश) के इंचार्ज डॉ संजय दीक्षित ने बताया कि इंदौर में कोरोना काल को छोड़कर तकरीबन हर साल अंगदान हुआ है। सोटो ऑर्गनाइजेशन मध्यप्रदेश के प्रमुख और मेडिकल कॉलेज इंदौर के डीन डॉ संजय दीक्षित हैं। डॉ दीक्षित ने बताया कि प्रदेश में किस अस्पताल में किसे ऑर्गन की जरूरत है, कौन दानदाता है और कैसे ऑर्गन अलोकेशन किया जाना है, यह सब सोटो के माध्यम से वे खुद देखते हैं। जरूरत पड़ने पर उन्हें रीजनल और नेशनल स्तर पर संचालित डोनेशन संस्थाओं से बात करनी होती है। डॉ० दीक्षित ने बताया कि ऑर्गन डोनेशन उतना आसान नहीं है, जितना इसे समझा जाता है। इसके पीछे एक पूरी प्रक्रिया और मशक्कत लगती है। अस्पताल और दान-दाता से लेकर जरूरतमंद तक और ब्लड मैंचिंग से लेकर टाइमिंग और अंगों के ट्रांसपोर्ट का काम देखना होता है। इसके साथ ही इस पूरी प्रकिया को पारदर्शी रखने की जरूरत होती है। उन्होंने बताया कि इंदौर में विनीता खजांची के अंग प्रत्यारोपण की प्रक्रिया में ग्रीन कॉरिडर बनाने से लेकर अंग को ले जाने के लिए चैन्नई से इंदौर आए चार्टर प्लेन तक की व्यवस्था देखने तक एक पूरी टीम ने काम किया। इसमें कई बार दो-दो रातों तक हम सो नहीं पाते हैं।

नेहा चौधरी

☞ **इंदौर के महाअंगदान :-**

16 जनवरी 2022 : विनीता खंजाची को डॉक्टरों ने ब्रेनडेड घोषित किया। जिसके बाद परिवार ने उनके लिवर, फेफड़े, आंखें, त्वचा, किडनी दान कर दी। उनके हाथ भी ट्रांसप्लांट किया। ऐसा प्रदेश में पहली बार हुआ।

21 सितंबर 2021 : इंदौर की 37 साल की नेहा चौधरी के अंग उनके परिवार ने दान किए थे। ब्रेन हेमरेज के बाद नेहा को डॉक्टरों ने ब्रेनडेड घोषित किया था।

24 सितंबर 2021 : 52 साल की डॉ० संगीता पाटिल को एक हादसे के बाद ब्रेन डेड घोषित कर दिया गया था। उनकी दोनों किडनी, लिवर, स्किन और आंखें डोनेट की गई थीं।

☞ **कौन सा अंग कितने समय में होता है ट्रांसप्लांट :-** आपको बता दें कि अंग प्रत्यारोपण में सबसे महत्वपूर्ण टाइमिंग है। हर अंग के प्रत्यारोपण के लिए एक तय समय होता है, अगर उस सीमा में उसे प्रत्यारोपित नहीं किया गया तो महादान का कोई अर्थ नहीं रह जाता है।

☞ **किस अंग को कितनी देर में प्रत्यारोपित किया जाता है :-** किडनी 12 घंटे, हार्ट 4 घंटे, लिवर 6 घंटे, आंख 3 दिन। इसके अलावा शरीर के दूसरे अंगों के लिए भी अलग-अलग समय निर्धारित है।

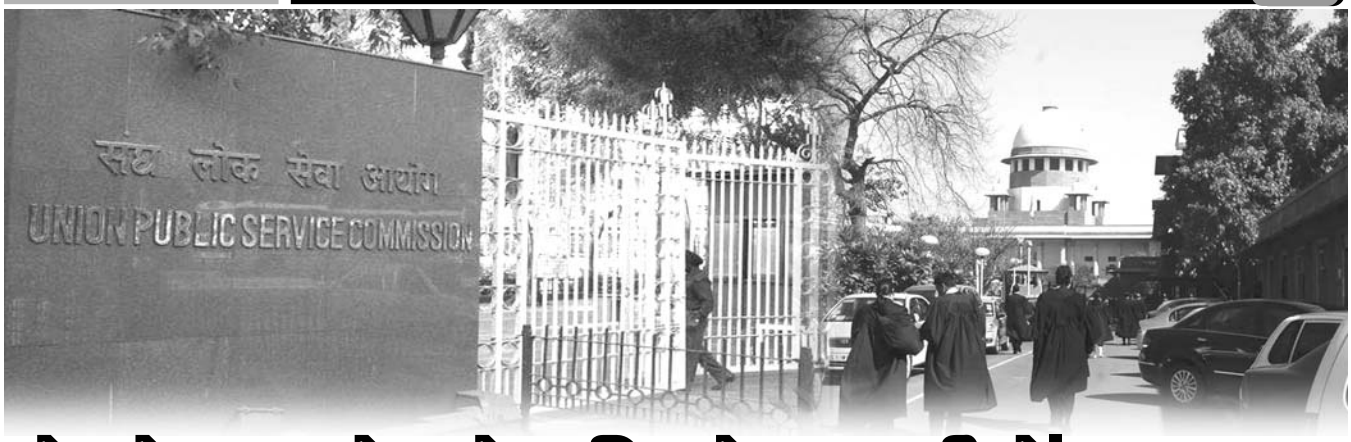

लोकसेवा आयोग के जरिए हो न्यायाधीशों का चयन

हाल ही में महामहिम उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ और कानून मंत्री किरेन रिजिजू तथा कुछ अन्य राजनेताओं ने उच्चतम न्यायालय के कॉलेजियम द्वारा उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति की कड़ी आलोचना की है। दरअसल, उच्चतम न्यायालय की संवैधानिक पीठ ने 16 अक्टूबर, 2015 को संसद द्वारा निर्मित न्यायाधीशों की नियुक्ति विषयक राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग अधिनियम, 2014 को संविधान सम्मत न मानते हुए 4-1 के बहुमत से निरस्त कर दिया था। उक्त अधिनियम के प्राविधान जटिल, विलम्बकारी और प्रारम्भिक स्तर से ही चयन में काफी कुछ सरकारी दखल वाले लगते हैं। किसी भी तरह कॉलेजियम से बेहतर नहीं है। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि कॉलेजियम व्यवस्था में भी नियुक्ति का अन्तिम निर्णय सरकार का ही होता है। सरकार का दायित्व है कि वह न्यायपालिका की स्वतंत्रता और गरिमा को बरकरार रखे। व्यवस्था कोई भी हो, उसमें समय के साथ परिवर्तन, परिवर्धन और बेहतरी की गुंजाइश बनी रहती है। न्यायिक व्यवस्था इसका अपवाद नहीं है। न्यायाधीशों के चयन में ज्यादा लोकतांत्रिकता और ज्यादा पारदर्शिता की जरूरत है, ऐसा न्यायिक जगत और उसके बाहर भी महसूस किया जाता रहा है। राज्य सभा में 15 जुलाई, 2019 को भाजपा सदस्य अशोक बाजपेयी ने यह मुद्दा उठाते हुए कहा कि कॉलेजियम व्यवस्था में जातिवाद, परिवारवाद से से लेकर पेशेवर निकटता जैसे पहलुओं का बोलबाला रहता है। इसके फलस्वरूप सामान्य परिवार से कानून के क्षेत्र में आए लोगों के लिए उच्च न्यायालय का न्यायाधीश बनना अत्यन्त कठिन है। उनका सुझाव था कि केन्द्रीय न्यायिक आयोग का गठन कर उसके माध्यम से न्यायाधीशों का चयन किया जाए। उनकी मांग से राजद के मनोज कुमार झा, सपा के रामगोपाल यादव आदि ने राज्यसभा में अपनी सहमति जताई।इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश रंगनाथ पांडेय ने 2019 में अपनी सेवानिवृत्ति के ठीक पहले प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखा था कि वर्तमान व्यवस्था में परिवारवाद, जातिवाद और सम्पर्कों के आधार पर न्यायाधीशों की नियुक्ति होने से न्यायिक व्यवस्था में बदहाली और अयोग्यता बढ़ रही है। न्यायाधीशों की नियुक्ति को लेकर वर्तमान में गतिरोध की स्थिति है। न्यायपालिका और सरकार की गरिमा बनी रहे और चयन में लोकतांत्रिक और पारदर्शी निर्णय हों, इसे देखते हुए मेरा सुझाव है कि उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों का चयन अगर संघ लोकसेवा आयोग के माध्यम से किया जाए, तो यह ज्यादा सरल, सहज, पारदर्शी और स्वीकार्य होगा। संघ लोकसेवा आयोग का ढांचा पहले से बना हुआ है। उसे उच्च प्रशासनिक, तकनीकी और विशिष्ट पदों के चयन का लम्बा अनुभव है। उसकी विश्वसनीयता भी है।

जगदीप धनखड़

किरेन रिजिजू

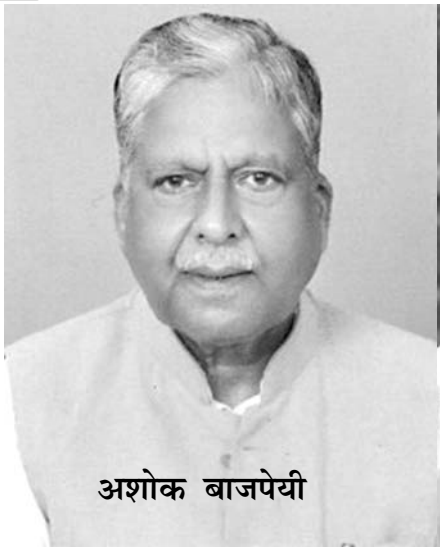
अशोक बाजपेयी

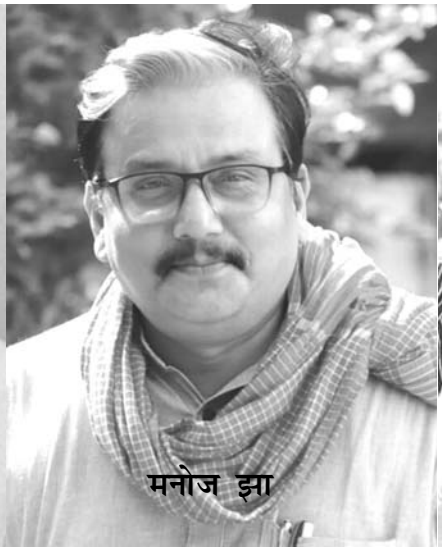
मनोज झा

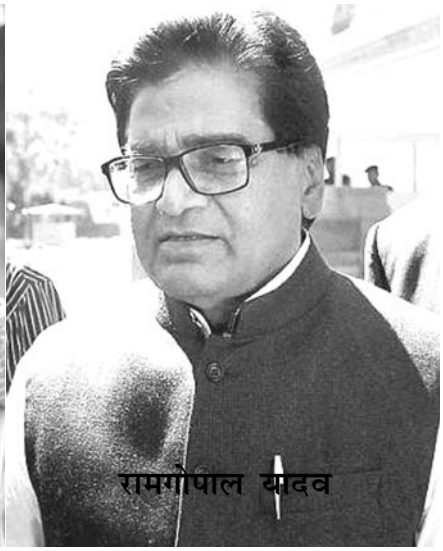
रामगोपाल यादव

न्यायाधीशों के चयन में व्यवस्था ऐसी होनी चाहिए कि उसमें न्यायिक जगत के अधिसंख्य लोगों को भाग लेने का खुला सुअवसर मिल सके। इस संबंध में उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय में न्यूनतम 10 वर्ष तक अधिवक्ता के रूप में कार्य कर चुके और न्यायिक सेवाओं में न्यायाधीश या मजिस्ट्रेट के पद पर दस वर्ष तक कार्य कर चुके अभ्यर्थियों को पात्रता की श्रेणी में रखा जाए। न्यूनतम आयु 45 वर्ष रखी जा सकती है, जैसा कि वर्तमान में है। उच्चतम न्यायालय की संस्तुति पर भारत सरकार पात्रता के सुझाव में यथावश्यक परिवर्तन कर सकती है। उच्चतम न्यायालय में सीधे चयन की प्रक्रिया को समाप्त कर देना चाहिए क्योंकि ऐसे चयन में बहुत शिकवा-शिकायत होती रहती है।

रंगनाथ पाण्डेय

प्रारंभिक चयन उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रूप में ही होना चाहिए। लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण अभ्यर्थियों का साक्षात्कार ऐसी समिति करे जिसमें अनुभवी और वरिष्ठ न्यायाधीशों का वर्चस्व रहे। इसके लिए साक्षात्कार समिति में उच्चतम न्यायालय के छह सेवानिवृत्त न्यायाधीशों और संघ लोकसेवा आयोग के एक सदस्य को मनोनीत किया जा सकता है। इस व्यवस्था से न्यायाधीशों के चयन में अनुभवी और वरिष्ठ न्यायाधीशों की भूमिका करीब-करीब कोलिजियम जैसी बनी रहेगी। न्यायाधीशों के चयन के बाद उनकी नियुक्ति, पदोन्नति और अन्य प्रशासकीय मामलों में कोलिजियम की भूमिका पूर्ववत बनी रहे। अगर ऐसा होता है, तो न्यायाधीशों के चयन में समान अवसर की भावना को बल मिलेगा, ज्यादा पारदर्शिता और लोकतांत्रिकता आएगी और 'पिक एंड चूज' के आरोपों से मुक्ति मिलेगी। यह लम्बे समय तक याद रखा जाने वाला महत्वपूर्ण सुधार होगा। बहरहाल, इस विषय में कोई भी निर्णय उच्चतम न्यायालय और भारत सरकार के हाथ में है।

अभी कलम उठाइये

आपके सामने हो रहे भ्रष्टाचार एवं अपराध की खबर की समीक्षा करें और सरकार सहित पुलिस-प्रशासन तक उसको पहुंचाने के लिए केवल सच पत्रिका के साथ जुड़े। खबर की जानकारी इस नम्बर पर दें

सम्पर्क करें:- 9431073769/9955077308

ई-मेल:- editor.kstimes@rediffmail.com पर भेजें।

Arrested terror suspects aimed to carry out attacks on political leaders : Delhi Police

days after two terror suspects were arrested in Delhi's Jahangirpuri area, Delhi Police claimed that they were tasked to plan and carry out attacks against certain leaders. The duo allegedly killed a man and dumped his body at different places in Delhi to prove their capability to their handlers based on cross border, police said. Three pistols, 22 live cartridges and two hand grenades were recovered during the investigation. Both are booked under UAPA Act and arms and explosive substance Act, police said. The duo comprising of Jagjit Singh (29) and Naushad Ali (56) were arrested by the Delhi Police Special Cell this week from Delhi's Jahangirpuri. They were tasked to plan and carry out attacks on right leaning leaders. The accused, the police said were in contact with some foreign entities involved in propagating terror activities in the country. Jagjit was lodged in Haldwani Jail in relation to a murder case where he developed close association with members of Bambiha gang who were also lodged in the same jail. He came out on 20 days Parole. On April 20, 2022 he was attacked by criminals affiliated with Lawrence Bishnoi gang in Gularbhoj in Gadarpur, Uttrakhand, police said. The accused, Naushad, was first arrested in a case under section 302 IPC from Jahangirpuri. In 1996, he was out on parole for two months. Again he was arrested in another case of murder with his other associates. In the year 2018, after completing 25 years imprisonment, he was released from Jail. During his long period in jail, he came in touch with cross border handlers, police claimed. Further interrogation is underway to identify forward and backward linkages, police said.

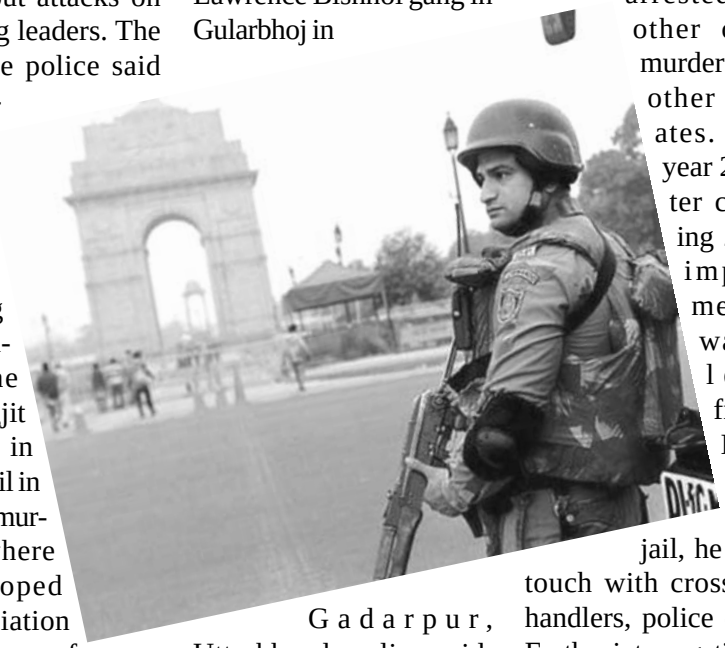

वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए बुरा सपना था 2022

क्यों 2023 को है भारत से बड़ी उम्मीद?

कोरोना से उबरती दुनिया के लिए 2022 एक बुरे सपने की तरह साबित हुआ। रूस-यूक्रेन युद्ध, महंगाई और कोरोनावायरस की वजह से वैश्विक अर्थव्यवस्था पर दबाव बढ़ा। अमेरिका में बढ़ती महंगाई को थामने के लिए जब फेडरल रिजर्व ने कड़े कदम उठाए तो कई देशों की अर्थव्यवस्था चरमरा गई। वहीं रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों ने समृद्ध यूरोपीय देशों की अर्थव्यवस्थ्था को झकझोर दिया। चीन, इंग्लैंड, जर्मनी, फ्रांस, अर्जेंटीना, ऑस्ट्रेलिया, श्रीलंका, पाकिस्तान जैसे देश आर्थिक रूप से परेशान नजर आए। लोगों की कॉस्ट ऑफ लिविंग बढ़ गई। कई देशों को खाद्य संकट ने परेशान किया तो ईंधन की कमी ने कुछ देशों की दाल पतली कर दी। अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष (IMF) के अनुसार, वैश्विक विकास दर 2021 में 6 प्रतिशत से घटकर 2022 में 3.2 प्रतिशत रह गई। 2023 में इसके 2.7 प्रतिशत रहने की आशंका है। 2021 में वैश्विक मंहगाई दर 4.7 फीसदी थी, 2022 में बढ़कर 8.8 प्रतिशत हो गई। हालांकि 2023 में इसके घटकर 6.5 फीसदी तक पहुंचने की संभावना है। वर्ल्ड बैंक के अनुसार, 2022 में अमेरिका 20.89 ट्रिलियन की इकोनॉमी के साथ दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थ्था बना हुआ है। चीन 14.72 ट्रिलियन के साथ दूसरे, जापान 5.06 ट्रिलियन इकोनॉमी के साथ तीसरे नंबर पर है। जर्मनी 3.85 ट्रिलियन के साथ चौथे नंबर पर है। ब्रिटेन और भारत में कड़ा मुकाबला है। फिलहाल 2.67 ट्रिलियन इकोनॉमी के साथ ब्रिटेन 5वें और भारत 2.66 ट्रिलियन इकोनॉमी के साथ 6ठे नंबर पर है।

☞ **क्या है अमेरिका की सबसे बड़ी समस्या :-** इस समय अमेरिकी अर्थव्यवस्था की सबसे बड़ी समस्या इंटरेस्ट रेट (ब्याज दर) में बढ़ोतरी है। इसे ऐसे समझते हैं कि 2020 में 10 साल का बॉन्ड यील्ड 0.25 प्रतिशत था, जो नवबंर 2022 में बढ़कर 3.83 प्रतिशत हो गया। इससे पता चलता है कि डॉलर से दुनियाभर की अर्थव्यवस्थ्था का संचालन करने वाले अमेरिका में घरेलू मोर्चे पर महंगाई किस कदर कहर ढा रही है।

☞ **इंग्लैंड में महंगाई की मार :-** 2022 इंग्लैंड के लिए बुरा सपना साबित हुआ है। बोरिस जॉनसन, थेरेसा मे जैसे दिग्गज प्रधानमंत्री के रूप में ब्रिटिश अर्थव्यस्थ्था को मजबूती देने में नाकाम रहे हैं। ऋषि सुनक के राज में भी ब्रिटेन की आर्थिक परेशानियां कम नहीं हुई हैं। मूलभूल चीजें बहुत महंगी हो गई हैं। सरकार से स्कूलों में मुफ्त भोजन दिए जाने की मांग हो रही है। बिजली, गैस, खाने के साथ ही घर और उससे जुड़ी चीजें भी काफी महंगी हुई हैं।

☞ **महंगाई ने दिया श्डबलश झटका :-** अर्जेंटीना, वेनेजुएला, ब्राजील आदि लैटिन अमेरिकी देशों

की हालत भी अच्छी नहीं है। अर्जेंटीना में महंगाई दर 1 साल में डबल हो गई। नवबंर 2021 में जिन वस्तुओं के दाम 10 रुपए थे 2022 में बढ़कर 19 रुपए हो गए हैं। 5 माह में 3 वित्तमंत्री बदले जा चुके हैं। कहा जा रहा है कि 2023 में भी इस दक्षिण अमेरिकी देश को महंगाई से राहत नहीं मिलने वाली है।

☞ **डॉलर से मोहभंग :-** 2022 में अमेरिका को आर्थिक मोर्च पर उस समय एक और बड़ा झटका लगा जब कई देशों का डॉलर से मोहभंग होता नजर आया। यूक्रेन युद्ध शुरू होने पर जब रूस पर वित्तीय प्रतिबंध लगे तो रूस और भारत ने रुपए और रुबल में कारोबार शुरू कर दिया। दोनों देशों के बीच सफल रहे प्रयोग ने तजाकिस्तान, क्यूबा और सूडान समेत कई देशों का ध्यान खींचा। 2023 में कई ऐसे देश जिनके पास डॉलर का भंडार कम है, भारत के साथ रुपए में

व्यापार कर सकते हैं। श्रीलंका, मॉरिशस समेत 4 देशों ने भारत में वोस्तरो अकाउंट (भारत में रुपए में खाता) खोलने में दिलचस्पी दिखाई है।

☞ **भारत से क्यों है उम्मीद :-** एक तरफ दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाएं संकट के दौर से गुजर रही है। लेकिन दुनिया की तमाम रैटिंग एजेंसियों को भारत से बड़ी उम्मीदें है। आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया, मेड इन इंडिया जैसे अभियानों ने भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रति लोगों ने दिलचस्पी को बढ़ाया है। खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भरता भारत की सबसे बड़ी ताकत है। एप्पल, फॉक्सवैगन जैसी बड़ी-बड़ी विदेशी कंपनियां भारत में अपने प्लांट

भूख और गरीबी के बिना दुनियां

गरीबी में आटा गीला' की कहावत वर्ष 2022 में कइयों ने महसूस की होगी। गेहूं के आटे की कीमत 12 सालों के उच्चतम स्तर पर है और खाने के तेल का भाव जायका खराब करने पर तुला हुआ है। बीता वर्ष विश्व में खाद्यान्नों की कीमतों के सबसे अधिक उछाल का वर्ष रहा है। यूक्रेन पर रूस के हमले को इस किल्लत का एक कारण और दाम वृद्धि का कारक ठहराया जा सकता है। वैश्विक कृषि क्षेत्र में रूस और यूक्रेन का बड़ा योगदान है। रूस और यूक्रेन में दुनियाभर के गेहूं का 29 प्रतिशत उत्पादन होता है। संयुक्त राष्ट्र संघ के खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) ने अंतरराष्ट्रीय कीमतों को दर्शाते हुए कहा है कि वर्ष 2022 में जरूरी खाद्य सामग्री की दर में विश्व स्तर पर 143.7 अंकों का इजाफा हुआ है जो वर्ष 2021 की तुलना में 14.3 प्रतिशत ज्यादा है। इस एजेंसी का गठन सन् 1990 में हुआ था और तब से अब तक का यह उच्चतम आंकड़ा है। इस एजेंसी का गठन भूख को हराने के लिए अंतरराष्ट्रीय प्रयासों के नेतृत्व के लिए हुआ था। इसका नारा है कि भूख और गरीबी के बिना दुनिया बनाने में हमारा साथ दें। क्या भारत यह साथ देने के लिए तैयार है, कभी तैयार था, कभी तैयार हो सकता है? ये सारे सवाल उठाना इसलिए लाजमी है क्योंकि कुछ आंकड़े हमें सोचने पर मजबूर कर देते हैं। आंकड़ों को ही देखें तो वे बताते हैं कि भारत में भूखे लोगों की संख्या 20 करोड़ से ज्यादा है और थ० की रिपोर्ट बताती है कि भारतीय रोजाना 244 करोड़ रुपए यानी पूरे साल में करीब 89,060 करोड़ रुपए का भोजन बर्बाद कर देते हैं। इतनी राशि से 20 करोड़ से भी अधिक लोगों का पेट भरा जा सकता है, जबकि सरकार की आर्थिक समीक्षा 2021-22 में कहा गया है कि भारत दुनिया के सबसे बड़े खाद्य प्रबंधन कार्यक्रमों में से एक का संचालक है। मिनिस्ट्री ऑफ कंज्यूमर अफेयर्स से मिली जानकारी कहती है कि 7 मई 2022 को गेहूं के आटे की औसत कीमत 32.78 रुपए प्रति किलोग्राम थी। उससे ठीक सालभर पहले 7 मई 2021 को यह 30.03 रुपए थी। यूक्रेन दुनिया में गेहूं का सबसे बड़ा वितरक है, वह जंग से जूझ रहा है, इस वजह से आपूर्ति में कमी आई है। हमारे देश में भी इस साल गेहूं की पैदावार कम रही जिससे कीमतों में उछाल आया। खाद्य पदार्थों की कीमतों में दस प्रतिशत उछाल आता है तो निर्धन परिवारों की आय में पांच प्रतिशत कमी हो जाती है। आसमान छूती महंगाई के अलावाङ्कऔर भी गम हैं जमाने में। लोगों पर कर्ज बढ़ रहा है, ऊर्जा की कीमतें बढ़ रही हैं और करोड़ों लोगों को जीवन यापन के संकटों से गुजरना पड़ रहा है। अपने खर्चों में कटौती करने के लिए यदि सस्ते मगर असुरक्षित पदार्थ खरीदते हैं तो वह उनके लिए और महंगे साबित हो जाते हैं। संयुक्त राष्ट्र की व्यापार एवं विकास एजेंसी UNCTAD के आंकड़े कहते हैं कि केवल संयुक्त राज्य अमेरिका में खराब गुणवत्ता वाले उपभोक्ता पदार्थों से हर साल 43 हजार लोगों की मौत हो जाती है और चार करोड़ लोग बीमार पड़ जाते हैं। मतलब अब दुनियाभर के देशों की सरकारों के लिए अपने उपभोक्ताओं को सुरक्षित रखना शीर्ष प्राथमिकता है।

डाल रही है। जब दुनिया भर के बाजारों से निवेशकों का मोहभंग हुआ, FDI और FII ने बाजार से अपना पैसा निकाला, भारत ने नए निवेशकों को अपनी और आकर्षित किया। संकट के इस दौर में भी भारतीय शेयर बाजार शीर्ष पर बने हुए हैं।

☞ **चीन से चौकन्ना रहने की जरूरत :-** भारत को इस दौर में चीन से विशेष तौर पर चौकन्ना रहने की जरूरत है। पिछले 2-3 सालों ने कई बड़ी कंपनियों ने चीन से अपना व्यापार समेट कर भारत में निवेश किया है। ऐसे में चीन भारत के सामने बड़ी बाधा उत्पन्न कर सकता है। चीन बड़ी मात्रा में भारत से सामान निर्यात करता है। फिलिपींस समेत कई देशों के माध्यम से चीनी सामान भारत आता है। बहरहाल आत्मनिर्भर भारत जैसे अभियानों की राह में चीन बड़ा रोड़ा बन सकता है। चालबाज चीन LAC पर तनाव बढ़ाकर भी विदेशी कंपनियों को भारत में निवेश से रोकने की योजना बना सकता है।

☞ **2023 में अर्थव्यवस्था पर रहेगा प्रेशर :-** फाइनेंशियल एक्सपर्ट और फिनेस्ट्रोसाइकल्स के फाउंडर नितिन भंडारी ने कहा कि 2023 में वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए थोड़ा प्रेशर दिखता है। सबसे महत्वपूर्ण चीज है इंटरेस्ट रेट। सारी कहानी अर्थ पर ही निर्भर है। जब से रूस यूक्रेन का मुद्दा शुरू हुआ है। क्रूड ऑयल की कीमतें नीचे आई हैं। जबकि कॉमन थ्योरी होती है कि युद्ध के समय क्रूड की कीमतें ऊपर जाती हैं। यह कुछ ही समय के लिए होता है। युद्ध के समय प्राइसेस नीचे ही जाती हैं और अभी भी नीचे ही है। क्रूड ऑइल मिडिल ईस्ट में होता है। वहां वेलफेयर आदि में काफी पैसा देना होता है। खुद के खर्चे भी ज्यादा हैं। वॉर के कारण इन देशों पर प्रेशर आ गया है। उन्होंने कहा कि पुरी दुनिया एक दूसरे से जुड़ी हुई

है। सभी देशों के निवेशक एक दूसरे के यहां डायरेक्ट या इनडायरेक्ट निवेश करते हैं। गवर्नमेंट बांड्स और स्टॉक मार्केट में होता है। सबसे ज्यादा बड़े निवेशक अमेरिका में हैं। पूरी दुनिया में पैसा लगाते हैं और घुमाते रहते हैं। इमरजिंग मार्केट में भारत, रूस, मिडिल ईस्ट आदि देश हैं। अमेरिका में इंटरेस्ट रेट बढ़ने से FPI भारत से निवेश किया गया पैसा निकाल रहे हैं। अमेरिका में पहले एक घर 10 लाख डॉलर में मिलता था तो उस पर 1 लाख डॉलर का डाउनपेमेंट करना होता था। आज अगर आप घर खरीदने जाएंगे तो आपको 1.5 लाख रुपए डाउन पेमेंट करना होगा। EMI भी 2000 डॉलर से बढ़कर 4000 डॉलर प्रतिमाह हो जाएगी। इससे लोग घर खरीदने के बजाए किराए का घर लेना पसंद करेंगे। इंटरेस्ट रेट बढ़ने की वजह से कार, रिसेल कारों की बिक्री में भी गिरावट आई है। अमेरिका ही नहीं यूरोपीय देशों में भी यही हाल है। यहां तक कि भारत में भी लोगों पर EMI का बोझ तो बढ़ा ही है। भंडारी ने कहा कि ऑस्ट्रेलिया की समस्या चीन और यूरोप की समस्या ब्रेक्जिट से जुड़ी है। नेचरल गैस यहां बड़ा कंपोनेंट है। महंगाई भी बड़ी समस्या है। रूस गेहूं, कच्चा तेल, प्राकृतिक गैस और रक्षा सामानों का बड़ा निर्यातक है। रूस यूक्रेन युद्ध की वजह से यूरोपीय देशों में फूड क्राइसेस बड़ी समस्या बन गया है। डिमांड सप्लाय में अंतर की वजह से महंगाई बढ़ेगी। फाइनेंशियल एक्सपर्ट सागर अग्रवाल ने बताया कि 2022 में वैश्विक अर्थव्यवस्था औंधे मुंह गिरी है। हर देश में महंगाई बढ़ी है। बैंक ने ब्याज दर बढ़ाई इससे बैंक लोन की EMI काफी बढ़ गई। कमाई का सोर्स लिमिटेड होने से स्थिति बदतर हुई है। भारत के अलावा किसी भी देश की GDP पॉजिटिव नहीं है, 2023 में दुनिया आर्थिक मंदी की चपेट में भी आ सकती है। इस स्थिति में भी FII पर हमारी निर्भरता घटी है। रूस से हमने आधे से कम दाम में क्रूड खरीदा। बहरहाल ऐसा माना जा रहा है कि 2022 की तरह ही 2023 में भी दुनियाभर की अर्थव्यवस्था दबाव में रहेगी। भले ही भारतीय अर्थव्यवस्था फिलहाल मजबूत दिखाई दे रही हो लेकिन अगर दुनिया की अर्थव्यवस्था गिरी तो भारत पर इसका कुछ असर तो होगा ही।

कॉम्पिटिशन एग्जाम कोचिंग में करियर

● डॉ. संदीप भट्ट

यह दौर जबरदस्त किस्म के कॉम्पिटिशन का है। हर तरफ बहुत से कॉम्पिटिटर तरह-तरह की तैयारियां करते हुए दिखते हैं। आजकल के दिनों में बच्चों से लेकर नौजवानों को अपने करियर के लिए हर दिन कड़ी मेहनत करनी होती है। अपने आसपास अगर हम सरसरी तौर पर नजर दौड़ाएंगें तो हमे साफ-साफ दिखेगा कि स्कूल एज्युकेशन से लेकर अच्छे कॉलेज मिलने तक के लिए हर तरफ प्रतियोगिताओं का स्तर भी साल दर साल बढ़ता जा रहा है। आज की हकीकत है कि स्कूल में ही बच्चों का कॉम्पिटिशन शुरू हो जाता है। कालेज तक आते-आते प्रतिस्पर्द्धा और बढ़ जाती है। हालांकि इन दिनों करियर के खूब नए विकल्प भी खुल रहे हैं लेकिन किसी एक युवा के लिए अपनी पसंद के बिल्कुल सही करियर का चयन करना और उसकी दिशा में आगे बढ़ने का काम बहुत ही चुनौतीभरा है। ऐसे में किसी करियर कोच या मेंटर की सलाह बहुत महत्वपूर्ण हो सकती है। करियर कोच किसी स्टूडेंट के भीतर की क्षमताओं, उसकी स्किल्स आदि को सही ढंग से पहचान सकता है। अगर हम जॉब या करियर के लिए जरूरी किसी स्किल में कमजोर हैं या किसी शॉर्टटर्म कोर्स करने से हमारे लिए संभावनाएं बढ़ सकती हैं तो करियर कोच हमें इस दिशा में कुछ टिप्स देकर आगे बढ़ने में मदद करते हैं। करियर कोचिंग एक बहुत ही महत्वपूर्ण फील्ड है। हाल के दिनों में कोचिंग का क्षेत्र बहुत बढ़ा है। एक करियर कोच स्टूडेंट्स या किसी प्रतियोगिता की तैयारी करने वाले कैंडिडेट का मूल्यांकन करते हैं। वे उनकी रूचियों एवं क्षमताओं आदि का सही आंकलन कर उन्हें बेहतर करियर की दिशा में आगे बढ़ने के लिए गाइड करता है। आज सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और डिजिटल दुनिया में अनेक करियर कोच करोड़ों युवाओं को मेंटर कर रहे हैं। स्टेफनी हीथ, कायॅली इलियट, अवध ओझा सर, खान सर, विकास दिव्यकीर्ति इन दिनों इंटरनेट की दुनिया में छाए हुए हैं। ये सभी लोग करियर कोच हैं। ये कोच ऑफलाइन-ऑनलाइन अलग-अलग जॉब्स के लिए प्रतियोगी युवाओं को तैयार करते हैं। कई नाम इस लिस्ट में जुड़ सकते है। ये सभी करियर कोच ऑनलाइन और ऑफलाइन कोचिंग करवाते हैं। पुलिस की कॉस्टेबल की भर्ती हो या सेना में करियर तलाशने की तैयारी, एसएससीए, बैंकिंग, रेलवे, यूपीएससी से लेकर स्टेट पब्लिक कमिशन सर्विसेज की तैयारी ये कोच करवाते हैं।

कोचिंग या मेंटरिंग आज कोई नया फील्ड नहीं है लेकिन एक कोच बनकर दूसरों के करियर को संवारने का काम खुद ही एक बहुत शानदार करियर ऑप्शन बनकर उभरा है। तमाम छोटे-बड़े शहरों से लेकर गांव और कस्बों तक कई कोच नौजवानों के लिए करियर मेंटरिंग कर रहे हैं। वे किसी भी दूसरे करियर या जॉब में मिलने वाली सैलरी से कई गुना ज्यादा कमा भी रहे हैं। यही कारण है कि आज कोचिंग के सेक्टर में अधिक से अधिक लोग आ रहे हैं। कॉम्पिटिशन कोच बनना एक बहुत ही अच्छा करियर फील्ड बन गया है। तो आइए देखते हैं कि कैसे हम एक बेहतर कॉम्पिटिशन कोच बन सकते हैं-

☞ **कोच की जरूरी क्वालिटीज** :- एक कोच कॉम्पिटिशन की तैयारी करने वाले दूसरे लोगों को मेंटर करता है। वह प्रतिभागियों की क्षमाताओं का आंकलन करता है। इसलिए उसके भीतर जबरदस्त विश्लेषण करने की क्वालिटी होनी चाहिए। चूंकि लोग उसके पास अपने करियर की समस्याओं के समाधान के लिए आते हैं, इसलिए उसे हाजिर जवाब होना चाहिए। उसे गाइडेंस की क्वालिटीज पर खास ध्याना देना चाहिए। एक कॉम्पिटिशन कोच की सबसे बड़ी खासियत होती है कि उसकी पर्सनैलिटी मल्टिडायमेंशनल यानी बहुमुखी होनी चाहिए। कोच को सेल्फ गाइडेड होना चाहिए। अच्छा कोच वही है जो सेल्फ मोटिवेट हो सके। उसे करियर के अधिकतम फील्ड्स के बारे में हर तरह की जानकारी होनी चाहिए। इसके साथ ही दुनियाभर में जॉब मार्केट में आ रहे बदलावों के प्रति उसे सजग रहना चाहिए।

☞ **कब करें तैयारी** :- अगर आप कॉम्पिटिशन कोच बनना चाहते हैं तो ध्यान रहे कि एक बेहतर कोच बनने के लिए हाइली क्वालिफाइड होना बहुत ही जरूरी है। लेकिन ग्रेजुएशन के बाद आप कोचिंग का काम शुरू कर सकते हैं। आपको यह तय करना पड़ेगा कि आप किन-किन फील्ड्स की कोचिंग कर सकते हैं। अगर आप विज्ञान विषयों के बैकग्राउंड से आते हैं तो आप मेडिकल, इंजीनियरिंग, डिजाइनिंग, आर्किटेक्चर, पैरामेडिकल, नर्सिंग आदि प्रोफेशनल कोर्सेज में एडमिशन के लिए कोच कर सकते

हैं। इसके साथ ही आप आर्म्ड फोर्सेज, पैरामिलिट्री, रेलवे जैसे विभागों के जॉब्स के लिए भी कोचिंग कर सकते हैं। अगर आप सोशल साइंस या ह्यूमैनिटीज के विषयों में ग्रेज्युएट हैं तो आप एसएससी से लेकर यूपीएससी तक की कोचिंग करा सकते हैं। अगर आप ऐसी किसी प्रतिष्ठित एक्जाम को क्वालिफाई कर चुके हैं तो आपकी लोकप्रियता और भी बढ़ सकती है। तो अगर आप कॉम्पिटिशन कोच बनना चाहते हैं तो ग्रेजुएशन या पीजी के बाद यह काम शुरू कर सकते हैं। याद रखें कोचिंग, मेंटरिंग में अनुभव बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। जैसे-जैसे आपका अनुभव बढ़ेगा आपके लिए कई तरह के नए आप्शंस भी खुलते रहेंगे।

☞ **स्कूल लेवल कॉम्पिटिशन कोचिंग :-** आज कल के वक्त में अच्छे स्कूल में एडमिशन के लिए भी टेस्ट क्वालिफाई करने पड़ते हैं। इसलिए स्कूली लेवल से ही कॉम्पिटिशन फाइट करने का चलन बढ़ गया है। सैनिक स्कूल, विविध राज्य सरकारों के रेसिडेंशियल स्कूल्स, नवोदय स्कूल्स के साथ-साथ अलग-अलग राज्यों की स्पोर्टस अकादमियों में पांचवी कक्षा में ही एडमिशन टेस्ट होते हैं। इस तरह अगर हम देखें तो बच्चों को प्राइमरी लेवल पर भी अच्छे कॉम्पिटिशन कोच की आवश्यकता है। स्कूलों में भी करियर कोच की आवश्यकता बढ़ रही है। टॉप स्कूल अपने यहां फुल टाइम कॉम्पिटिशंस कोच रखते हैं। तो अगर आप स्कूल लेवल के कॉम्पिटिशन कोच बनना चाहते हैं तो आपके लिए बहुत अवसर हैं।

याद रखिए कि अभी हमारे यहां केवल 10वीं या 12वीं के बाद स्कूली बच्चों को मेडिकल और इंजीनियरिंग के लिए ही ज्यादातर तैयार करने का चलन है। यह भी केवल कस्बों और बड़े शहरों तक ही सीमित है। लेकिन इससे छोटी कक्षाओं के बच्चों को भी करियर और कॉम्पिटिशन की कोचिंग की आवश्यकता है। इसका अपना बड़ा बाजार है। इसलिए आप स्कूली लेवल के कॉम्पिटिशंस के कोच बनकर इसमें स्पेशलाइजेशन भी कर सकते हैं। यह एक ऐसा सेक्टर है जहां अभी बहुत कम काम हुआ है इसलिए इसमें संभावनाएं भी बहुत हैं।

☞ **कॉलेज लेवल कॉम्पिटिशन कोचिंग :-** आज के वक्त में हर युवा के पास एक सवाल जरूर होता है कि आखिर कॉलेज की स्टडी पूरी करने के बाद क्या किया जाए। दरअसल हर युवा या हर कोई चाहता है कि कॉलेज की पढ़ाई पूरी करने के तत्काल बाद उसे कोई न कोई अच्छी जॉब मिल जाए। लेकिन अच्छी जॉब मिलना बहुत मुश्किल है। इसके लिए न सिर्फ अच्छी एजुकेशन होना जरूरी है बल्कि कई तरह के प्रोफेशनल कोर्सेज या सर्टिफिकेशन की भी आवश्यकता हो सकती है। ऐसे में एक अच्छा कोच या मेंटर ही आपको बता सकता है कि कॉलेज पूरा करने के बाद तत्काल आपको किस तरह के करियर या प्रोफेशनल कोर्स करने की आवश्यकता है। दरअसल कॉलेज लेवल पर आकर कई तरह के कॉम्पिटिशन होते हैं। यहां किसी स्पेशलाइजेशन के कोर्स करवाने वाले संस्थानों में एडमिशन से लेकर नौकरियों के कोचिंग की आवश्यकता होती है। तो एक कॉम्पिटिशन कोच के बतौर आप कॉलेज लेवल कॉम्पिटिशन के कोच भी बन सकते हैं। हमारे देश में 1000 से भी ज्यादा यूनिवर्सिटीज हैं और हजारों की तादाद में कॉलेजेस हैं जिनसे हर साल लाखों स्टूडेंट पास आउट होते हैं। हर पास आउट स्टूडेंट एक बेहतरीन करियर की तलाश में रहता है। ऐसे में अगर आप कॉलेज लेवल के कॉम्पिटिशन्स के कोच बनते हैं तो आपके लिए यह सेक्टर अनंत संभावनाओं से भरा हुआ है।

सरकारी नौकरियों के लिए :- जॉब मार्केट और करियर के लिहाज से देखें तो हमारा देश बहुत संभावनाओं से भरा हुआ देश है। यहां सरकारी फील्ड में लाखों जॉब हैं। केंद्र और राज्य सरकारों के स्तर पर सभी विभागों में लाखों जॉब्स मौजूद हैं। लेकिन इसके लिए कॉम्पिटिशन भी बहुत कड़ा है। अलग-अलग सरकारी विभागों में विशेषज्ञता वाले जॉब भी बहुत बड़ी संख्या में मौजूद होते हैं जिसके लिए एक करियर कोच भी आपको बेहतर ढंग से बता सकता है। खास बात यह है कि देश में सरकारी नौकरियां आज भी हर आम आदमी की पहली च्वाइस हैं।

☞ **सैन्य सेवाओं के लिए कोचिंग :-** भारतीय सेना दुनिया की सबसे बड़ी फौज है। लाखों लोग सैन्य सेवाओं में काम करते हैं। जोश और जुनून वाले लोगों के लिए आर्म्ड फोर्सेस एक शानदार करियर होता है। तो अगर आप सैन्य सेवाओं का कोच बनना चाहते हैं तो आपको सेना के कामकाज, रेजिमेंट, कोर, भर्ती आदि की जानकारियां होनी चाहिए। सेना में कमिशंड ऑफिसर्स और नॉन कमिशंड ऑफिसर्स की भर्तियां किस तरह होती हैं। इसके लिए एक कैंडिडेट में क्या फिजिकल और एजुकेशनल क्वालिटीज होनी चाहिए, आपको पता होना चाहिए।

☞ **फॉरेन फैलोशिप के लिए कोचिंग :-** हमारे देश में फॉरेन से एजुकेशन लेने का चलन बहुत तेजी से बढ़ रहा है। फॉरेन यूनिवर्सिटीज में एडमिशन लेने के लिए लाखों स्टूडेंट्स आवेदन करते हैं। यही नहीं विदेशी युवा भी हमारे देश में आकर डिग्री या कोई प्रोफेशनल कोर्स करना चाहते हैं। ऐसे में फॉरेन फैलोशिप्स और एजुकेशन की कोचिंग भी एक बहुत शानदार फील्ड है।

इस तरह अगर हम देखते हैं तो कॉम्पिटिशन कोचिंग में भी बहुत से सब-फील्ड्स दिखते हैं। आज हर तरफ कॉम्पिटिशन का दौर है। हर किसी को सक्सेस चाहिए। ऐसे में कॉम्पिटिशन कोच की डिमांड बहुत बढ़ गई है। आने वाले वक्त में कॉम्पिटिशन कोच की मांग लगातार और बढ़ेगी। अगर आप कोच बनते हैं तो अपनी रूचि के अनुसार स्पेशलाइजेशन जरूर चुन लें। ऐसा करने से आपकी क्रेडिबिलिटी (भरोसा) बढ़ेगी और किसी भी बिजनेस में विश्वसनीयता बहुत मायने रखती है। खासकर जब आपका काम सलाह देना हो तो आपकी ब्रांड क्रेडिबिलिटी बहुत अच्छी होना जरूरी है। तो अगर आप करियर और कॉम्पिटिशन कोचिंग में खुद का भविष्य संवारना चाहते हैं तो एक शानदार फील्ड में आपका स्वागत है।

प्लेन से लेकर बसों तक क्यों शर्मसार कर रहे भारतीय मुसाफिर?

● नवीन रांगियाल

पिछले कुछ समय से भारत में ऐसी घटनाएं देखने को मिली हैं, जिनके बारे में सुन और पढ़कर ही शर्मिंदगी महसूस होती है। यहां तक कि इनके बारे में सार्वजनिक तौर पर बात करना ही मुश्किल है। लेकिन इन घटनाओं का जिक्र इसलिए जरूरी है, क्योंकि इनसे न सिर्फ देश की छवि खराब हो रही है, बल्कि एक तरह से भारतीयों की बदलती मानसिकता का भी संकेत दे रही है। आखिर अचानक ऐसा क्या हुआ है कि भारतीय ट्रेन में, बसों में और यहां तक कि फ्लाइट तक में ऐसी अजीब और बेशर्म हरकतें करने लगे हैं कि उनके बारे में जानकर हर कोई शर्मिंदा हो जाए। पहले जानते हैं शर्मसार करने वाली इन घटनाओं के बारे में :-

☞ **महिला यात्री पर की पेशाब** :- हाल ही में नशे में धुत पुरुष यात्री ने न्यूयॉर्क से दिल्ली जाने वाली एयर इंडिया की एक फ्लाइट में बिजनेस क्लास में बैठी 70 साल की एक महिला यात्री पर पेशाब कर दी। पेशाब करने वाला यात्री नशे में धुत था। पीड़ित महिला ने केबिन क्रू को सूचना दी, लेकिन उन्होंने यात्री के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की और न ही कोई चेतावनी दी। बल्कि आरोपी विमान लैंड होने के बाद आराम से वहां से चला गया। महिला को थक कर टाटा समूह के चेयरमैन एन. चंद्रशेखरन को एक पत्र लिखकर अपनी व्यथा बतानी पड़ी। पीड़ित बुजुर्ग महिला यात्री ने अपने पत्र में कहा कि विमान के केबिन क्रू ने घटना पर कोई रिएक्शन नहीं दिया। उन्होंने लिखा कि मैं व्यथित हूं कि एयरलाइन ने इस घटना के दौरान मेरी सुरक्षा और सुविधा सुनिश्चित करने की कोशिश तक नहीं की। मामला सामने आने के बाद हालांकि एयर इंडिया ने आरोपी यात्री को 'नो-फ्लाई लिस्ट' में डाला।

☞ **बस में महिला को दिखाया प्राइवेट पार्ट** :- दिल्ली परिवहन निगम (DTC) की एक बस में एक व्यक्ति द्वारा एक महिला के सामने अपना प्राइवेट पार्ट दिखाने का हैरान करने वाला मामला सामने आया है। दरअसल, सोशल मीडिया पर एक वीडियो साझा किया जा रहा है, जिसमें बस का मार्शल यह दावा कर रहा है। पुलिस ने जांच शुरू की है, लेकिन महिला ने बयान देने या टिप्पणी करने से इनकार कर दिया। वीडियो में आरोपी की पहचान जाकिर के तौर पर हुई है। बस के मार्शल संदीप छिखारा जब वीडियो में महिला से घटना के बारे में पूछते हैं तो वह यह आरोप लगाती सुनी जा सकती है कि शख्स ने उसके सामने अपना गुप्तांग दिखाया है। मार्शल द्वारा पकड़े जाने पर वह रोता हुआ दिख रहा है। घटना उत्तर पश्चिम दिल्ली के रोहिणी में हुई थी।

☞ **फ्लाइट में युवक की पिटाई** :- कोलकाता से थाइलैंड जा रही इंडिगो की एक फ्लाइट में मारपीट की घटना का वीडियो सोशल मीडिया में खूब वायरल हुआ। जिसमें किसी बात को लेकर तीन- चार लोगों ने एक युवक की फ्लाइट में ही पिटाई कर दी थी। पहले जमकर बहस और गाली-गलौच की गई। उसके बाद दो तीन लोगों ने मिलकर एक युवक को थप्पड़ मारे और धक्का- मुक्की की। इस तरह के विवाद आमतौर पर बसों में देखने को मिलते हैं, लेकिन अब यह फ्लाइट में भी होने लगा है।

☞ **क्रू मेंबर से यात्री की बदतमीजी** :- फ्लाइट में ही सफर के दौरान एक और वीडियो सामने आया, जिसमें एक यात्री ने फ्लाइट की क्रू मेंबर

से जमकर बदतमीजी की। उसने महिला क्रू मेंबर को इतना बुरी तरह से डांटा कि वो एक तरफ जाकर रोने लगी। जानकारी के मुताबिक यात्री ने खाने के लिए कोई सामग्री मांगी थी, जो उपलब्ध नहीं था। इस बात से व्यथित होकर एक दूसरी क्रू मेंबर ने उस यात्री को ठीक से बिहेव करने को लेकर जमकर लताड़ लगाई थी। उसने यात्री की लू उतारते हुए कहा था कि हम फ्लाइट के स्टाफ और एम्पलाई हैं, आपके गुलाम और नौकर नहीं हैं। इस बहस का वीडियो भी सोशल मीडिया में वायरल हुआ था।

☞ **क्या कहते हैं मनोचिकित्सक?** :- इंदौर के जाने-माने मनोचिकित्सक डॉ० वी.एस. पॉल ने बताया कि सबसे पहली और महत्वपूर्ण बात तो यह है कि पढा-लिखा होना और नैतिक व्यवहार या जिम्मेदारी दोनों अलग-अलग चीजें हैं। पढे-लिखे होने से नैतिक व्यवहार से कोई फर्क नहीं पडता। इसमें महत्वपूर्ण बात यह है जो लोग इस तरह की हरकतें कर रहे हैं, उनका बचपन कैसे गुजरा, उनकी परवरिश कैसे हुई है और उनके परिवार में क्या माहौल रहा है। दूसरा इस दौडती-भागती जिंदगी में हर आदमी बहुत स्ट्रेस में है, वो किसी भी बात को सहन करने या धैर्य से उससे निपटने के लिए तैयार नहीं है। ऐसी घटनाओं से बचने के लिए रिलेक्स रहना, अपनी मेंटल हेल्थ पर ध्यान देना और मानसिक व शारीरिक हेल्थ में संतुलन बनाए रखना बहुत जरूरी है। मनोचिकित्सक डॉ० सत्यकांत त्रिवेदी ने बताया कि कोरोना काल के बाद मानसिक संतुलन में अस्थिरता बढी है। लोगों में धैर्य की कमी हो गई है। धैर्य नहीं होना, जल्दी और बगैर सोचे-समझे रिएक्ट करना भी खराब मेंटल हेल्थ के लक्षण हैं। ओटीटी आदि का भी लोगों पर असर है, जबकि इसे सिर्फ बतौर मनोरंजन लिया जाना चाहिए। हमें मानसिक स्वास्थ्य की बेहतरी के लिए अभियान चलाना चाहिए। कुल मिलाकर मेंटल असेसमेंट की बहुत जरूरत है।

कानूनी सलाह

शिवानंद गिरि
(अधिवक्ता)
Ph.- 9308454485
7004408851
E-mail :-
shivanandgiri5@gmail.com

✯ भारत में वकालत की शुरुआत कब से हुई एवं इसका क्या इतिहास रहा है?

विधि व्यवसाय एक पवित्र एवं आदर्श व्यवसाय है। अधिवक्ताओं को साधु, संत, विद्वान, क्षमा,दान, ध्यान, दया, त्याग एवं धैर्य का स्वरूप माना जाता है। सुप्रीम कोर्ट भी अपने कई निर्णयों में अधिवक्ताओं को अफसर ऑफ द कोर्ट कहती है, तो जानते हैं आखिर ये वकील अर्थात अधिवक्तागण कौन होते हैं तथा वे विधि व्यवसाय किस प्रकार करते हैं एवं विधि व्यवसाय क्या है तथा भारत में विधि व्यवसाय का क्या इतिहास रहा है? विधि व्यवसाय एक कठिन विषय है। इसकी भाषा एवं उपबंध अत्यंत कलिस्ट माने जाते हैं। विधि का अध्ययन कर पाना हर व्यक्ति के लिए संभव नहीं है, योग्य अनुभवी एवं प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्ति ही इसे आसानी से समझ सकते हैं, यही कारण है कि विधि का अपना एक अलग ही अध्याय है। जो व्यक्ति इसका अध्ययन करता है वह व्यक्ति अधिवक्ता कहलाता है।

☞ **विधि व्यवसाय :-** अधिवक्ता द्वारा न्यायालय के समक्ष अपने पक्षकार के पक्ष को प्रस्तुत करना तथा उसकी ओर से पैरवी करना है। विधि व्यवसाय लीगल प्रोफेशन कहलाता है, क्योंकि अधिवक्ता का यह एक तरह से व्यवसाय होता है और इसके लिए वह अपने पक्षकार से शुल्क प्राप्त करता है। विधि व्यवसाय को अधिवक्ता, एडवोकेट, वकील, प्लीडर आदि के नामों से जाना जाता है। विधि व्यवसाय से अभिप्राय मात्र- राय हेतु प्राइस तौर पर न्यायालय परिसर का भ्रमण करने से नहीं है अपितु न्यायालयों में नियमित रूप से पैरवी करने से है। बार काउंसिल ऑफ इंडिया बनाम बालाजी एआईआर 2018 SC 1382 के अनुसार न्यायालयों में नियमित रूप से पैरवी अथवा प्रैक्टिस करना ही अधिवक्ता का कार्य है। भारत में विधिक व्यवसाय की जड़े अतीत की गहराइयों में छिपी है। सामान्यत: भारत में इसका श्रीगणेश ब्रिटिश काल में माना जाता है। इससे पूर्व विधिक व्यवसाय जैसी कोई बात भारत में नहीं थी। हिंदू काल में इसका अस्तित्व नहीं था, क्योंकि राजा ही न्यायधीश हुआ करता था। वहां किसी प्रकार की विधिक औपचारिकताएं नहीं हुआ करती थी।

☞ **भारत में विधि व्यवसाय का विकास :-**

(1) मेयर कोर्ट एवं सुप्रीम कोर्ट- भारत में विधि व्यवसाय का आरंभ 1926 के चार्टर द्वारा प्रथम बार मेयर न्यायालयों की स्थापना के साथ माना जा सकता है, इन न्यायालयों में न्याय प्रशासन का संचालन एक सुनिश्चित प्रक्रिया के अंतर्गत किया जाता था। न्यायालयों का गठन एवं प्रक्रिया इंग्लैंड के न्यायालयों के समान थी। सन् 1773 के रेगुलेटिंग एक्ट तथा सन् 1774 के चार्टर द्वारा विधि व्यवसाय को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया गया। इन्हीं के अंतर्गत भारत में सुप्रीम कोर्ट की स्थापना की गई थी।

(2) कंपनी न्यायालयों में विधि व्यवसाय- मेयर कोर्ट की स्थापना के साथ विधि व्यवसाय का सूत्रपात हो गया था लेकिन नियमित एवं व्यवस्थित स्वरूप में नहीं होने के कारण सन् 1793 में एक रेगुलेशन पारित किया गया, जिसमें बंगाल में सदर दीवानी अदालत के लिए वकीलों को प्रथम बार सूचीबद्ध किया गया, कालांतर में सन 1814 के बंगाल रेगुलेशन में विधि क व्यवसाय के संबंध में कतिपय उपबंध किए गए, जिन्हें सन् 1833 के रेगुलेशन द्वारा परिष्कृत किया गया।

(3) भारतीय उच्च न्यायालय अधिनियम 1861 के अधीन विधि व्यवसाय- सन् 1861 में भारतीय उच्च न्यायालय अधिनियम इंडियन हाई कोर्ट्स एक्ट पारित किया गया और इस अधिनियम के अंतर्गत प्रत्येक प्रेसिडेंसी नगर में एक उच्च न्यायालय की स्थापना की गई, इस अधि नियम द्वारा सुप्रीम कोर्ट एवं सदर अदालतों को समाप्त कर दिया गया, इस अधिनियम तथा अन्य छात्रों द्वारा उच्च न्यायालयों को वकील अटॉर्नी एडवोकेट आदि को सूचीबद्ध करने तथा अनुमोदित करने की शक्तियां प्रदान की गई। इन न्यायालयों में सूचीबद्ध व्यक्तियों को ही वकालत करने का अधिकार था।

(4) लीगल प्रैक्टिशनर्स एक्ट के अधीन विधि व्यवसाय- विधि व्यवसाय को बढ़ाने के लिए समय-समय पर लीगल प्रैक्टिशनर्स एक्ट पारित किए गए, जैसे- लीगल प्रैक्टिशनर्स एक्ट 1846, लीगल प्रैक्टिशनर्स एक्ट 1853, लीगल प्रैक्टिशनर्स एक्ट 1793 ।

1846 के एक्ट के अनुसार केवल सूचीबद्ध वकील ही न्यायालयों में प्रैक्टिस कर सकते थे। 1853 के एक्ट द्वारा सुप्रीम कोर्ट के अटॉर्नी तथा बैरिस्टर को कंपनी की सदर न्यायालयों में पैरवी करने की इजाजत प्रदान की गई, लेकिन भारतीय वकील सुप्रीम कोर्ट में पैरवी नहीं कर सकते थे, इस एक्ट द्वारा विधि व्यवसायियों को दो वर्गों में रखा गया था-

(1) एडवोकेट- एडवोकेट आयरलैंड या इंग्लैंड का बैरिस्टर या स्कॉटलैंड के प्लीडर संकाय का सदस्य होता था।

(2) वकील- वकील भारतीय विश्वविद्यालयों के विदेश के नागरिक हुआ करते थे।

(5) इंडियन बार काउसिल एक्ट 1926 के अधीन विधि व्यवसाय- सन् 1923 में सर एडवर्ड चामियार की अध्यक्षता में एक इंडियन बार कमेटी का गठन किया गया। इस कमेटी को निम्नांकित के बारे में सुझाव देने का काम सौंपा गया।

बार का गठन एवं हाईकोर्ट के लिए अखिल भारतीय स्तर पर बार काउंसिल की स्थापना :- इस कमेटी द्वारा अनेक सुझाव दिए गए। कमेटी के सुझावों को लागू करने के लिए 1926 में इंडियन बार काउंसिल एक्ट पारित किया गया। मुफस्सिल कोर्ट में कार्य करने वाले वकील एवं मुख्तार इस एक्ट की परिधि में नहीं आते थे।

(6) स्वतंत्र भारत में विधि व्यवसाय- विधि व्यवसाय को संगठित एवं व्यवस्थित स्वरूप स्वतंत्र भारत में मिला। सन् 1951 में न्यायमूर्ति एस आर दास की अध्यक्षता में एक अखिल भारतीय विधिक कमेटी का गठन किया गया, इस कमेटी द्वारा निम्नलिखित सुझाव दिए गए :-

(1) भारतीय विधिक परिषद (बार काउंसिल ऑफ इंडिया)

(2) राज्य विधिक परिषद (स्टेट बार कौंसिल)

कमेटी ने इन परिषदों को और अधिक शक्तियां प्रदान करने की सिफारिश की गई। इसी अनुक्रम में सन् 1961 में अधिवक्ता अधि नियम एडवोकेट एक्ट 1961 पारित किया गया, जिसमें अधिवक्ताओं की आचार संहिता, पंजीयन भारतीय विधिक परिषद राज्य विधिक परिषद के बारे में विस्तृत व्यवस्था की गई है। **(शेष जानकारी अगले अंक में)**

GSTIN : 10KEPD0123PIZP

उत्तर भारत का COOKIE MAKER, सीवान में पहली बार
आपके लिए लेकर आया है

Cookie का बेहतर श्रृंखला

PRATIK ENTERPRISES

राजपुर (रघुनाथपुर) में अत्याधुनिक मशीनों द्वारा रस्क, बिस्कुट, बर्गर, मीठा ब्रेड, वंद, क्रीम रोल, पेटीज और बर्ड डे केक, पार्टी केक ग्राहकों के मनपसंद तैयार किया जाता है।

शुद्धता एवं स्वाद की 100% गारंटी

किसी भी अवसर पर
एक बार सेवा का मौका अवश्य दें।

प्रतीक फुड कंपनी

प्रतीक इंटरप्राइजेज, प्रतीक पतंजलि
राजपुर, रघुनाथपुर, सीवान (बिहार)

-: सौजन्य से :-

ब्रजेश कुमार दुबे

Mob.-9065583882, 9801380138

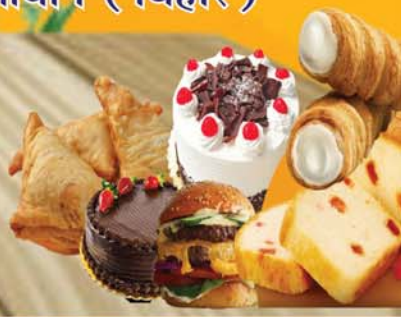

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.
(Serving nation since 1990)

WESTOCITRON
WESTOCLAV
WESTOFERON
WESTOPLEX
QNEMIC

AOJ
AZIWEST
DAULER
MUCULENT
AOJ-D
BESTARYL-M
GAS-40
MUCULENT-D

SEVIPROT
WESTOMOL
WESTO ENZYME
ZEBRIL

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.
Dispersing Happiness

WESTERLIN DRUGS PVT. LTD.
Industrial area, Fatuha-803201
E-mail- westerlindrugsprivatelimited@gmail.com
Phone No.:0162-3500233/2950008